ओ३म्
आर्य जगत
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 24 मार्च 2019 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 24 मार्च 2019 से 30 मार्च 2019

चैत्र कृ. – 04 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 61, अंक 12, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव सह बोधोत्सव पटना में सुसम्पन्न

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, बिहार एवं डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल्स, बिहार प्रक्षेत्र, की ओर से महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव –सह –बोधोत्सव डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, बी.एस.ई.ब्री. कालोनी, राजबंशी नगर, पटना के स्वामी श्रद्धानन्द सभागार में हर्षोल्लास पूर्वक धूमधाम से सपन्न हुआ। इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में आर्य जगत के प्रसिद्ध गवेशक एवं ऋषि भक्त, आचार्य धर्मबन्धु जी, गुजरात उपस्थित हुए।

सायं 5 बजे से यज्ञ प्रारंभ हुआ जिसमें स्थानीय प्राचार्यगण वरिष्ठ शिक्षकों तथा आर्य सदस्यों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। यज्ञ के पुरोहितों में श्री मनोज शास्त्री, श्री अरविंद शास्त्री, डॉ. डी.डी. मिश्र एवं श्री ओम प्रकाश आर्य विराजमान थे।

मंचीय कार्यक्रम, अतिथियों के सत्कार एवं दीप प्रज्वलन से आरम्भ हुआ। पूरा सभागार शिक्षकों तथा आर्य जनों से खचाखच भरा हुआ था। समारोह के संयोजक डॉ. वी.एस. ओझा, ने आगत अतिथियों का स्वागत करते हुए उप सभा प्रधान डॉ. यू. एस. प्रसाद के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। डॉ. ओझा जी ने महर्षि दयानन्द जी के समाजिक कार्यों की ओर श्रोताओं का ध्याानाकृष्ट किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा के प्रधान डॉ. उमाशंकर प्रसाद, ने महर्षि

शेष पृष्ठ 11 पर

अनिल कुमार डी.ए.वी. इस्माईलाबाद में हुआ 51 कुंडीय यज्ञ

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल इस्माईलाबाद (कुरुक्षेत्र) में 51 कुण्डीय यज्ञ एवं ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। इस सुअवसर पर मुख्य अतिथि श्रीमान एच.आर. गंधार सलाहकार, प्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति नई दिल्ली रहे। कार्यक्रम का आरंभ मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके यज्ञ एवं मंत्रोच्चारण से हुआ। सभी ने बड़ी श्रद्धा और भक्तिभाव से यज्ञ व भजनोपदेश में भाग लिया।

श्री एच.आर गंधार जी ने विद्यार्थियों और आए हुए अभिभावकों को डी.ए.वी. के इतिहास एवं संस्था के महान उद्देश्यों से परिचित करवाया। विद्यार्थियों ने बड़े ही ध्यानपूर्वक सुनकर अपना उत्साह दिखाया।

विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सर्वजीत जी ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया और अपने उद्बोधन में कहा कि हमें दयानन्द जी के पद्चिह्नों पर चलना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज द्वारा संचालित संस्थाओं का शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान है। वेद अपनाने से ही सुख समृद्धि व आनन्द प्राप्त हो सकता है।

विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने अपनी प्रस्तुति दी और वेद एवं वैदिक संस्कृति की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस मौके पर यज्ञ में आहुतियाँ डालकर पुलवामा में शहीदों की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की व भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

डी.ए.वी. मॉडल स्कूल सैक्टर- 15 ए, चण्डीगढ़ द्वारा प्रस्तुत झाँकी प्रथम पुरस्कार से सम्मानित

केन्द्रीय आर्य सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं मोहाली के संयुक्त तत्त्वावधान में 195वाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव के शुभावसर पर चण्डीगढ़ नगर में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें ट्राई सिटी के विभिन्न शिक्षण संस्थान व आर्य समाजें अपनी–अपनी संस्थाओं की ओर से विभिन्न विषयों पर झाँकी लेकर सम्मिलित हुए।

डी.ए.वी. मॉडल स्कूल सैक्टर 15–ए, चण्डीगढ़ की ओर से भी 'युग निर्माता स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की चतुर्विध क्रांति' विषय पर एक झाँकी प्रस्तुत की गई जिसे कार्यक्रम में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

झाँकी में विद्यार्थियों ने बड़े हर्षोल्लास और उत्साह से हिस्सा लिया। सुसज्जित ट्रक पर झाँकी में उपस्थित हर विद्यार्थी इस महान् दार्शनिक और समाज सुधारक के क्रांतिकारी विचारों को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे थे। ऐसा लगा रहा था मानो वे लोगों का आहवान दे रहे हों कि उनके उच्च और आधुनिक विचारों के महत्त्व को समझें तथा जीवन में धारण करें ताकि श्रेष्ठ समाज की संरचना करने में अपना योगदान दे सकें। झाँकी के शिखर पर एक वेदवृक्ष भी बनाया गया जिसके द्वारा वेदों में दिया गया विश्वकल्याण व विश्वशांति का संदेश आम लोगों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया।

झाँकी के साथ–साथ शोभा यात्रा में विद्यालय की प्राचार्या, अध्यापकजन, विद्यार्थी हाथ में 'ओ३म्' ध्वज व विभिन्न उद्घोष लिए तथा डम्बल बजाते व महर्षि दयानन्द के जयकारे लगाते हुए शोभा यात्रा को शोभायमान कर रहे थे।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 24 मार्च 2019 से 30 मार्च 2019

हिरण्य-धारण

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

आयुष्यं वर्चस्यं रायस्पोषमौद्भिदम्।
इद् हिरण्यं वर्चस्वज्, जैत्रायाविशतादु माम्।।

यजु ३४.५०

ऋषिः **दक्षः**। देवता **हिरण्यं तेजः** छन्दः **भुरिग् उष्णिक्।**

● (**आयुष्यं**) आयु के लिए हितकर, (**वर्चस्यं**) ब्रह्मवर्चस को प्राप्त कराने वाला, (**रायस्पोषं**) ऐश्वर्य का पोषक (**औद्भिदं**) (शत्रुओं, विघ्न–बाधाओं एवं दुःखों को) उद्भिन्न कर देने वाला (**इदं**) यह (**वर्चस्वत्**) आत्म–कान्ति से युक्त (**हिरण्यं**) हिरण्मय तेज (**जैत्राय**) विजय के लिए (**मां**) मुझमें (**आविशतात् उ**) प्रविष्ट होवे।

● संसार के युद्ध–क्षेत्र में शत्रुओं, विघ्न–बाधाओं और दुःखों से संघर्ष करते हुए मुझे विजय प्राप्त करनी है। यदि मैंने विजय का उपाय न किया तो शत्रु मुझे निगल जायेंगे, बाधाएँ एक पग भी आगे न बढ़ने देंगी, दुःख निरन्तर कचोटते रहेंगे। इन सब पर विजय पाने के लिए आवश्यक है कि मैं 'हिरण्य' धारण करूँ। 'हिरण्य' सुवर्ण का नाम है। सुवर्ण तेजस्वी होता है, अतः ज्योति या तेज को भी 'हिरण्य' कहते हैं। मैं अपने शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा में 'ज्योति' को धारण करूँगा। शरीर को स्वस्थ, सबल, तेजस्वी बनाऊँगा। मन को *शिव संकल्पवाला, अडिग, तेजोमय* बनाऊँगा।

बुद्धि को त्वरित गति से सही निश्चय पर पहुँचनेवाली, शक्तिशालिनी, भास्वती बनाऊँगा। आत्मा को बलवान, विवेकशील, ज्योतिष्मान् एवं वर्चस्वी बनाऊँगा। अब तक मैं व्यथे ही सुवर्ण के आभूषण बनवाकर अंगुली, कलाई, कान आदि शरीर के किसी अंग में पहनकर यह मानता था कि मैंने 'हिरण्य' धारण कर लिया। पर आज मुझे ज्ञात हो गया है कि असली हिरण्य तो ज्योति या तेज है, जिसे अंग–अंग में धारण कर लने से मनुष्य अत्यन्त शक्तिशाली हो जाता है। शरीर के एक बहुमूल्य तत्त्व 'वीर्य' को भी शास्त्रकारों ने 'हिरण्य' कहा है। इस 'वीर्य' या 'रेतस्' को अनावश्यक रूप से प्रस्खलित न कर शरीर में धारण कर लेना एंव 'उर्ध्वरेताः' बन जाना ज्योति या तेज की प्राप्ति का एक सफल उपाय है। यह ज्योति, तेज और वीर्य रूप हिरण्य का धारण दीर्घ एवं उत्तम आयु को देनेवाला है, ब्रह्मवर्चस को प्राप्त करनेवाला है, भौतिक तथा आध्यात्मिक ऐश्वर्य की पुष्टि को देनेवाला है। यह 'औद्भिद' है, बीज का अंकुर जैसे भूमि की परत को फाड़कर ऊपर आ जाता है, वैसे ही यह सब प्रकार की भौतिक और मानसिक रूकावटों को, विविध दुःखों और पीड़ाओं को एवं बाह्य और आन्तरिक रिपुओं को उद्भिन्न करके उत्कर्ष की ओर ले जानेवाला है। यह 'हिरण्य' मेरे अन्दर प्रवेश करे, प्रचुरता और तीव्रता के साथ प्रवेश करे।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

यज्ञ प्रसाद

● महात्मा आनन्द स्वामी

पूज्य महात्मा श्री आनन्द स्वामी सरस्वती जी महाराज ने अपने प्रवचन यज्ञ के सम्बन्ध में कहा कर्म के साथ–साथ ज्ञान और उपासना भी यज्ञ के प्रमुख अंग है। प्रत्येक मानव इस संसार में प्रवेश करते समय अपने ऊपर देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋण लेकर आता है। कर्मयज्ञ करने से – जिसमें पंचमहायज्ञ भी शामिल हैं – देवऋण और पितृऋण, और ज्ञानयज्ञ करने से ऋषिऋण से मुक्ति मिलती है। परमेश्वर सबको सत्य कर्म करने की तथा सत्य कर्म का संरक्षण करने की बुद्धि दे, अपने ज्ञान से पवित्र करनेवाला ज्ञानी हमारे ज्ञान को पवित्र करे, तथा उत्तम वक्ता हमारी वाणी को मधुर बनाए जिससे हम सब उन्नत हो सकें।

ईश्वर–समर्पण की भावना से सदा ओत–प्रोत रहना ही उपासना–यज्ञ का रूप है। उपासना–यज्ञ से मानव मोक्ष–पद का अधिकारी हो जाता है और चिरकाल के लिए जन्म–मृत्यु के बन्धन से छूट परम आनन्द को प्राप्त होता है।

अब आगे ....

प्रतिदिन प्रार्थना करें

यज्ञ के ये तीनों रूप एक–दूसरे से अविच्छिन्न हैं, अविभक्त, अनुस्यूत और एकाकार रूप से संश्लिष्ट हैं। मानव तीनों का क्रमशः पालन करने के लिए प्रतिदिन निम्न प्रार्थना करे –

श्रद्धां मेधां यशः प्रजां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेज आयुष्ममारोग्यं देहि मे हव्यवाहन।।

अर्थ– हे यज्ञ! तुम्हारे अनुष्ठान से मुझे श्रद्धा, मेधा, यश, सन्तान, विद्या, पुष्टि, श्री, बल, तेज, आयु और आरोग्यता प्राप्त हो।

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणाः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्।।

अर्थ– भगवान्! हमारे देश में जो पुत्ररहित हैं वे पुत्रवान् हों और पुत्रोंवाले पौत्रों को प्राप्त करें। निर्धन धनवान् हों और सब 100 वर्ष तक जियें।

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी।
जगदिदं क्षोभरहितं विदुषः सन्तु निर्भयाः।।

अर्थ – समय पर मेघ बरसे और पृथिवी धान्य से भरपूर हो। यह देश अशान्ति से रहित हो और विद्वान् पुरुष निर्भय हों।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

अर्थ – सब सुखी हों, नीरोग हों, सब कल्याण और भद्र देखें, कोई दुःख को प्राप्त न करे।

दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च।
श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोस्त्विति।।

अर्थ – हमारे भीतर दाता बढ़ें, वेदों का विस्तार हो और उत्तम सन्तान की वृद्धि हो। श्रद्धा हमारे से कभी दूर न हो और दूसरों को देने के लिए हमारे पास बहुत–कुछ हो।

अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि।
याचितारश्च नः सन्तु मा स्म याचिष्म कंचन।।

अर्थ – हमारे घरों में बहुत अन्न हो। हम अतिथियों का लाभ उठानेवाले हों। हमारे पास याचना करनेवाले आएँ। हम किसी से याचना न करें।

कबीर के शब्दों में

साईं इतना दीजिए, जा में कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।
चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटयों नीर।
दान दिये धन ना घटे, कह गए दास कबीर।।

सुकृत मार्ग का साधन–यज्ञ

मुण्डक उपनिषद् में यज्ञ की महिमा का वर्णन करते हुए इसे श्रेष्ठ कर्मों की ओर प्रेरणा देनेवाला 'सत्य मार्ग' कहा है और इस पर दृढ़ता से आचरण करने की शिक्षा दी गई है। मुण्डक ऋषि कहते हैं कि –

"एष वः पन्था सुकृतस्य लोके"

(1/2/1)

हे मनुष्यों! तुम्हारे लिए धर्म–मार्ग पर चलने का यही एकमात्र उत्तम मार्ग है।

मुण्डक ऋषि इस 'सुकृत मार्ग' की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि जिस समय यज्ञ की अग्नि प्रदीप्त होती है और ज्वालाएँ ऊपर की ओर उठने लगती हैं, उस समय यजमान और यज्ञ–वेदी पर उपस्थित व्यक्तियों को श्रद्धा के साथ आहुतियाँ देनी चाहिएँ। अगर अग्नि प्रदीप्त न हो और आहुतियाँ भी श्रद्धापूर्वक न दी जाएँ तो विधिरहित होने से सात लोकों का पुण्य–लाभ समाप्त हो जाता है और उस यज्ञ से किसी प्रकार का आर्थिक व मानसिक लाभ नहीं होता।

यज्ञ की अग्नि–शिखाएँ–प्रेरणा का स्रोत

इसी सम्बन्ध में मुण्डक ऋषि आगे कहते हैं कि यज्ञ की प्रदीप्त अग्नि की ज्वालाएँ उसकी सात जिह्वाओं के समान हैं। मन की गति–सदृश ये वेग से ऊपर उठनेवाली हैं, कभी कृष्णवर्ण, कभी धूम्रयुक्त और कभी चिंगारियोंवाली ये अग्नि–शिखाएँ सब–कुछ आत्मसात् करनेवाली हैं। यजमान इन ऊर्ध्वगामी ज्वालाओं को देखता हुआ अपने आत्मा को उच्च पथ पर चलने की प्रेरणा दे। वह यह अनुभव करे कि मेरी विचारधाराएँ भी ऊर्ध्वगामिनी हैं, मेरे पापमय

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

संस्कारों का प्रभाव

● डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

वैदिक संस्कारों के नैत्यिक और नैमित्तिक दो विभाग हैं। इस पर हम ऊपर बहुत बल दे चुके हैं नैत्यिक विभाग में पंचयज्ञ सम्मिलित हैं। संस्कार सोलह हैं। उपनयन से पहले पञ्चयज्ञों का भार बालक के ऊपर नहीं होता, परन्तु बालक के माता–पिता और परिवार का कर्त्तव्य है कि स्वयं पञ्चयज्ञ करते रहें। जिससे बालक के अन्तःकरण व आत्मा पर भी उनका संस्कार पड़ता रहे। जिन घरों में सन्ध्या, अग्निहोत्र, अतिथि–पूजा आदि पञ्चयज्ञ नित्य होते रहते हैं, उनके बच्चों को विशेष शिक्षा की अर्थात् तमीज सिखाने की आवश्यकता नहीं होती। उनको यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि ईश्वर है या नहीं और यदि है तो कहाँ है? वह जिस प्रकार माता के दूध का पान करते हैं, उसी माता से या उसके आचरणों से आस्तिकतारूपी दुग्ध का भी पान करते रहते हैं और आचरणों का प्रभाव शिक्षा से भी कई गुना पड़ता है। अंग्रेज़ी में एक कहावत है– ''व्याख्यान की अपेक्षा कार्य–दर्शन अधिक उपयोगी है।'' यदि बालक पूर्वजन्म के संस्कारों में नास्तिकता का अंश लाता भी है, तो वह बड़े–बूढ़ों व माता–पिता के उत्तम आचरणों के प्रभाव से नष्ट हो जाता है और शुभ संस्कार अपना स्थान जमा लेते हैं। फिर नैमित्तिक संस्कारों में गर्भाधान से लेकर उपनयन के पूर्व तक बच्चा देखता है कि उसके सम्बन्ध में जब कोई नया कृत्य आरम्भ होता है, तो यज्ञ अवश्य होता है, वेदमन्त्र अवश्य पढ़े जाते हैं, ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना अवश्य की जाती है। इसका उसके आत्मा पर अवश्य प्रभाव पड़ता है।

हमने एक बच्चे को देखा, जो बहुत छोटा था, परन्तु अपने परिवार के साथ ऐसे संस्कारों में आया–जाया करता था। उसकी आयु इतनी छोटी थी कि शुद्ध भी उच्चारण नहीं कर सकता, परन्तु जब याज्ञिक लोग मन्त्र पढ़ते, तो वह भी उनके साथ मन्त्रों की भाँति कुछ न कुछ उच्च स्वर से उच्चारण किया करता। जो मन्त्र नहीं जानते थे, वे समझते थे कि इसको मन्त्र ही याद करा दिये हैं। वस्तुतः हृदय में मन्त्रोच्चारण करने और यज्ञ में भाग लेने की बलवती उत्कंठा उत्पन्न हो चली थी। इसका परिणाम यह हुआ कि उसमें शीघ्र ही आस्तिकता के अंकुर उठ खड़े हुये। यही हाल उन बालकों का होता है, जो बालकपन में अपने माता–पिता के नैत्यिक संस्कारों और अपने तथा अन्य बच्चों के नैमित्तिक संस्कारों से प्रभावित होते रहते हैं।

वस्तुतः, ऐसे ही बालक जब गुरु से गायत्री अर्थात् गुरु–मन्त्र लेते हैं, और यज्ञ करने का अधिकार पाते हैं। तो उनके ऊपर गुरु–मन्त्र का भी विशेष प्रभाव पड़ता है। जिनके परिवार में ईश्वरोपासना नहीं की जाती, जिनके घर में बिना पाँच यज्ञों में से कोई भी यज्ञ किये बिना ही भोजन किया जाता है, जिनके घर में कभी कोई वेदपाठी यज्ञ नहीं कराता, जिनके घर में प्रत्येक नया कार्य बिना ईश्वर–प्रार्थना के आरम्भ कर दिया जाता है, उनमें कुछ भौतिक गुण पाये जाने पर भी कोई आत्मिक–गुण विद्यमान नहीं होता और यदि कोई बालक अपने पुराने जीवन के आस्तिकता के संस्कार लाया भी हो, तो वे भी विरोभूत हो जाते हैं। ऐसे बालक गुरुमन्त्र को भी विशेष रीति से नहीं समझ सकते। उनके लिए गायत्री का मन्त्र और वेब्स्टर–डिक्शनरी का कोई पद एक ही अर्थ रखता है।

संस्कार और यज्ञ– यज्ञ का होम भाग जीवन के लिए कितना उपयोगी है, यह आजकल कम समझ में आता है। प्राचीन वैदिक आर्य लोग इसकी महत्ता को इतना समझते थे कि उनका कोई भी कार्य बिना होम से आरम्भ हुये सम्पन्न नहीं होता था। उस काल में वह इतना ही आवश्यक समझा जाता था, जितना आजकल सामाजिक प्रतिष्ठा के लिये प्रीति–भोज समझा जाता है। जब कोई हर्ष का समय होता है, तो मित्र कहते हैं– 'दावत खिलाओ।' यह क्यों? इसलिये कि भोजन का शारीरिक जीवन से विशेष सम्बन्ध होने के कारण भोजन सामाजिक संगठन का भी साधन है। यह एक शीराजा है, जिससे समाजरूपी पुस्तक के पृष्ठ बंधे रहते हैं। इसीलिये पाश्चात्त्य देशों में भी टी–पार्टी, गार्डन–पार्टी, एट–होम आदि का बड़ा भारी प्रचार है। परन्तु भोजन से कहीं अधिक शरीर का सम्बन्ध होम से है। जहाँ भोजन स्थूल रूप से पेट के लिये उपयोगी है, वहाँ हवन में जलाये हुए सुगन्धि–युक्त पदार्थ सूक्ष्म रूप से कई गुनी शक्ति में शरीर और मस्तिक दोनों के लिये उपयोगी हैं।

होम्योपैथीवाले जानते हैं और पहले आयुर्वेदज्ञ भी जानते थे कि सूक्ष्म होने से किसी वस्तु की शक्ति–पोटेन्शियैलिटी बढ़ जाती है। इसलिये जहाँ आजकल होम्योपैथी में उच्चशक्ति की औषधियाँ दी जाती हैं, और वैद्यक में रस दिये जाते हैं, वहाँ प्राचीन प्रणाली में होम को भी रोग–निवृत्ति और स्वास्थ्य–रक्षा का एक विशेष साधन माना गया है। होम में परिवार और सम्बन्धियों को न केवल यज्ञ–शेष अर्थात् प्रसाद ही मिलता है, किन्तु उनको उस प्रसाद से भी अधिक बहुमूल्य और शक्तिशाली सूक्ष्म–प्रसाद की भी प्राप्ति होती है और सामाजिक संगठन में इससे बड़ी सहायता मिलती है। दूसरे जिन व्यक्ति का संस्कार करना होता है, उसका मस्तिष्क हवन की सुगन्धि से इसे योग्य हो जाता है कि सूक्ष्म शिक्षाओं को भली प्रकार ग्रहण कर सके।

'ईश्वर प्रार्थना' के भी लाभ बहुत से हैं। नैमित्तिक संस्कार में प्रतिज्ञाएँ और मन्त्रोच्चारण भी उतने ही उपयोगी हैं, क्योंकि इनके द्वारा न केवल सुसंस्कृत व्यक्ति समाज की साक्षी में विशेष जीवनयात्रा के लिये प्रतिज्ञा ही करता है, अपितु उसके आत्मा पर भी बड़ा प्रभाव पड़ता है।

यदि पाठकगण संस्कारों में आये इन मन्त्रों के अर्थों पर विचार करेंगे (जिनका ज्ञान संस्कारविधि या ऋषि दयानन्द कृत वेद–भाष्य से हो सकता है), तो पता लगेगा कि नैत्यिक पाँच यज्ञों और उनके अनुकूल आचरण करने के साथ–साथ नैमित्तिक सोलह संस्कार में पढ़े जानेवाले मन्त्र आदि से मनुष्य के आत्मा पर किस प्रकार के प्रभाव पड़ सकते हैं, और वे पूर्वजन्म के अनुचित संस्कारों को दबाने और उचित संस्कारों को परिपक्व करने में कहाँ तक सहायता दे सकते हैं? हाँ यह अवश्य है कि मन्त्रों के तात्पर्य से सबको अभिज्ञ होना चाहिये। साहित्य का मनुष्य को आत्मा पर जितना प्रभाव पड़ता है, उतना अन्य किसी वस्तु का नहीं पड़ता। यदि अर्थ समझते हुये किसी मन्त्र या पद का पाठ किया जाये, तो मस्तिष्क के समस्त कोष्ठों (Brain sells) में परिचालन और परिवर्तन होने लगता है। और यदि इस प्रकार अर्थपूर्वक निरन्तर पाठ किया जाय, तो मस्तिष्क के कोष्ठ सर्वथा ही बदल जाते हैं, और मनुष्य को अन्यथा विचार करना असम्भव हो जाता है। यदि संस्कारों द्वारा हमारी आत्मा इस प्रकार की बन जाये कि बुरे भावों का उठना असम्भव हो जाये, तो हमारी उन्नति में सन्देह ही क्या है?

आर्य–जाति में जो बहुत से उत्तम गुण आजकल गिरी दिशा में भी वर्तमान हैं और जो अर्वाचीन सभ्य जातियों में प्रयत्न के पश्चात् भी विकसित नहीं हो पाये, जैसे आस्तिकता, अहिंसा, उदारता आदि, यह सब निरन्तर संस्कारों का ही फल है। और जो कुछ अवगुण आर्य जाति में आ गये हैं। उनका कारण भी संस्कारों का अर्थ न समझना, केवल लकीर के फकीर होना मात्र है। इन रस्मोरिवाजों से भी एक लाभ अवश्य हुआ है, अर्थात् वे प्रथाएँ हम तक सुरक्षित आ सकी हैं, और उनसे लाभ उठाने का हमको अवसर मिल गया है। यदि संस्कारों का यह रस्मोरिवाज रूपी आकार भी नष्ट हो जाता, तो हमको वैदिक संस्कारों के पुनरुत्थान का कोई अवसर प्राप्त नहीं हो सकता था। अतः जब तक जनता संस्कारों को पूर्णरूप से समझ न सके, उस समय तक भरसक प्रयत्न करना चाहिए कि संस्कारों का प्रचार होता रहे। जातियों से शुभगुण, न एक साथ जाते हैं, और न उनमें एक साथ आते हैं। इनके लिए बहुत समय लगता है। इसलिए हमको संस्कारों के प्रचार के लिए प्रबल आन्दोलन करना चाहिए।

संस्कारों के अधिकारी – यहाँ एक बात और लिखने योग्य है, अर्थात् संस्कारों का अधिकार किसको है? बहुत से लोग समझते हैं कि स्त्रियाँ अमुक संस्कारों की अधिकारिणी नहीं हैं, शूद्र अमुक संस्कार नहीं कर सकते, इत्यादि। हम संस्कारों का तात्पर्य ऊपर बता चुके हैं। प्रत्येक स्त्री–पुरुष, बालक–बालिका, जो अपने हृदय पर अच्छे संस्कार डालना चाहता या चाहती है, संस्कारों का अधिकारी या अधिकारिणी है। इन सोलह संस्कारों में से केवल एक संस्कार ऐसा है, जिसका अधिकार सबको नहीं दिया जा सकता, अर्थात् संन्यास–संस्कार। इसका कारण यह है कि संन्यास में मनुष्य को निष्काम कर्म करने और दूसरों को उपदेश देने का अधिकार दिया जाता है। समाज की ओर से यह अधिकार उसी स्त्री या पुरुष को मिल सकता है। जो ऐसी उच्च अवस्था को पहुँच गया हो कि निष्काम भाव से दूसरों का उपदेश कर सके। इसीलिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा है–

(प्रश्न) संन्यास ग्रहण करना ब्राह्मण ही का धर्म है, या क्षत्रियादि का भी?

(उत्तर) ब्राह्मण ही को अधिकार है, क्योंकि जो सब वर्णों में पूर्ण विद्वान्, धार्मिक, परोपकार प्रिय मनुष्य है, उसी का नाम 'ब्राह्मण' है। बिना पूर्ण विद्या के, धर्म परमेश्वर की निष्ठा और वैराग्य के, संन्यास ग्रहण करने में संसार का उपकार नहीं हो सकता। (सत्यार्थप्रकाश, समुल्लास 5)

इससे सिद्ध है कि यज्ञोपवीत आदि शेष सभी संस्कार स्त्रियों–पुरुषों आदि सभी मनुष्यों को करने चाहिएँ। केवल यह देख लेना चाहिये कि जो व्यक्ति कोई संस्कार करवा रहा है, वह उसके नियम पालने के योग्य है या नहीं। उद्देश्य पर दृष्टि रखने से ये सब कठिनाइयाँ दूर हो सकती हैं।

''जिसे करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं, इसलिये संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है।''

– (संस्कारविधि–महर्षि दयानन्द सरस्वती)

"अग्निर्ज्योति" चाणक्यपुरी
अमेठी, उ. प्र.–227405
मो. 09415185521

स्वामी दयानन्द की 'अज्ञात–जीवनी' का वस्तुतः कोई औचित्य है क्या?

● भावेश मेरजा

आर्य समाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रारम्भिक जीवन के वृत्तान्त को जानने के दो ही प्रमुख एवं प्रामाणिक स्रोत हैं –

1. थियोसोफिस्ट पत्रिका के अक्टूबर 1879, दिसम्बर 1879 तथा नवम्बर 1880 के अंको में अंग्रेज़ी में प्रकाशित स्वामी जी का स्व–जीवनचरित्र। इसे स्वामी जी ने स्वयं हिन्दी में लेखबद्ध किया था। थियोसोफिस्ट में प्रकाशित यह वृत्तान्त अधूरा है और इसमें स्वामी जी का नर्मदा तट पर्यन्त का अर्थात् 1916 वि.संवत् (1859 ई.) तक का विवरण उपलब्ध होता है। स्वामी जी वेद भाष्य आदि के लेखन तथा धर्मोपदेश के अन्य कार्यों में अति व्यस्त रहने से तथा आर्य समाज और थियोसोफिकल सोसायटी के सम्बन्ध में आई गिरावट के कारण स्वामी जी के स्व–जीवनचरित्र लेखन–प्रकाशन का यह क्रम यहीं समाप्त हो गया।

2. 1875 ई. में पूना में स्वामी जी का स्व–जीवन विषयक एक व्याख्यान।

आर्य समाज के कुछ महानुभावों ने किन्हीं धारणाओं से अनुप्राणित होकर स्वामी जी को 1857 ई. की क्रान्ति के साथ जोड़ने का प्रयास किया। उन लोगों का कहना है कि स्वामी जी ने क्रान्ति के उन वर्षों में वे कहां थे, क्या करते थे, इत्यादि कुछ नहीं बताया है, अतः उस 'अज्ञात जीवनी' से यह प्रतीत होता है कि उन्होंने उस क्रान्ति में विशेष भूमिका निभाई है। दूसरी ओर आर्य समाज के ही कुछ प्रमुख जागरूक इतिहासज्ञ विद्वानों ने उन बातों का सशक्त प्रतिवाद भी किया और इसी को लेकर विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में अनेक लेख प्रकाशित हुए। आज भी ये दोनों प्रकार की बातों का क्रम रुका नहीं है।

1857 की क्रान्ति का आरम्भ मई में हुआ था और समाप्ति हुई थी *अक्टूबर 1858 में। अर्थात् विक्रम संवत्* 1913–1914–1915 इस क्रान्ति के वर्ष रहे। स्वामी दयानन्द का जन्म 1825 ई. में हुआ था। इस क्रान्ति के समय उनकी आयु 32–33 वर्ष थी। उन्होंने 21 वर्ष की आयु में गृहत्याग किया था और पिछले 11–12 वर्षों से वे सच्चे योगी महात्माओं तथा गुरुओ का अन्वेषण करते हुए निरन्तर देशाटन कर रहे थे। उसी समय यह क्रान्ति हुई थी।

थियोसोफिस्ट पत्रिका में प्रकाशित स्व–जीवनचरित में स्वामी जी ने अपने जन्म से लेकर वि. संवत् 1916 (अर्थात् 1859 ई.) तक का वृत्तान्त क्रमशः परन्तु संक्षेप में प्रस्तुत किया है। इसमें दिए गए विवरण के आधार पर यहाँ वि. संवत् 1911–1912 (1855 ई.) से लेकर वि. संवत् 1915–1916 (1859 ई.) तक की – लगभग चार वर्ष की कालावधि में वे कहां–कहां गए और इस भ्रमण के दौरान उनके तत्कालीन उद्देश्य, अभीष्ट तथा मनोभावना आदि को प्रकट करने वाली जो विशेष बातें उन्होंने अपने इस आत्मकथन लिखी हैं, उन्हें यहां प्रस्तुत किया जाता है। इस बात को लेकर आश्चर्य होता है कि इन वर्षों में अपनी यात्राओं का इतना स्पष्ट वर्णन करने वाले स्वामी जी की भी कोई 'अज्ञात जीवनी' हो सकती है ! ऐसी 'अज्ञात जीवनी' का क्या औचित्य हो सकता है?

थियोसोफिस्ट में प्रकाशित स्वामी जी के स्व–जीवनचरित में लिखे गए यात्रा–वर्णन का सटिप्पण संक्षिप्त वृत्तान्तः

आबू – हरिद्वार – ऋषीकेश – "फिर आबूराज पर्वत में **योगियों को सुनके** वहां जाके अर्वदा भवानी आदि स्थानों में भवानिगिरि आदि **योगियों से मिल के कुछ और योगाभ्यास की रीति सीख के** संवत् 1911 के वर्ष के अन्त में हरिद्वार के कुम्भ के मेले में आके बहुत साधु–संन्यासियों से मिला और जब तक मेला रहा, तब तक चण्डी के पहाड़ में **योगाभ्यास करता रहा।** जब मेला हो चुका, तब ऋषीकेश में जाके **संन्यासियों और योगियों से योग की रीति सीखता और सत्संग करता रहा।**" – टिहरी – यहाँ स्वामी जी तन्त्र **ग्रन्थों का अवलोकन** करते हैं। – श्रीनगर (उत्तराखण्ड) – यहाँ भी उन्होंने तन्त्र **ग्रन्थों का अवलोकन** किया और गंगागिरि नामक एक साधु से उनका **योग विषयक वार्तालाप** हुआ। – केदारघाट – रुद्रप्रयाग – अगस्त मुनि – शिवपुरि – यहाँ चार मास निवास किया। – गुप्त काशी – त्रियुगीनारायण का स्थान – गौरीकुण्ड –भीमगुफा – केदार – यहाँ कई साधु, पण्डे, पुजारियों से स्वामी जी का समागम हुआ। उनको इच्छा हुई कि इन बर्फ के पहाड़ों में घूम कर **देखना चाहिए कि कोई साधु महात्मा रहता है कि नहीं।** – तुंगनाथ – ओखी मठ – इस मठ के महन्त ने स्वामी जी को अपना उत्तराधिकारी बनने की बात की, परन्तु स्वामी जी ने इन्कार कर दिया और कारण पूछने पर कहा कि – **"मैंने जिस लिये सब (अर्थात् अपना माता, पिता, बन्धु, कुटुम्ब, घर आदि) छोड़े हैं, वह तुम्हारे पास किंचित् मात्र भी नहीं है।"** महंत ने पूछा कि वह क्या बात है? स्वामी जी ने लिखा है – **"मैंने उत्तर दिया कि सत्य विद्या, योग, मुक्ति और अपने आत्मा की पवित्रता आदि गुणों से धर्मात्मता पूर्वक उन्नति करना है।"** – गुप्त काशी – जोशीमठ – स्वामी जी ने लिखा है – "जोशी मठ को पहुँच के वहाँ के दक्षिणी शास्त्री और संन्यासी थे उनसे मिलकर वहाँ ठहरा और **बहुत से योगियों और विद्वान् महन्तों और साधुओं से भेंट** हुई और उनसे वार्तालाप में मुझको **योग विद्या सम्बन्धी और बहुत नई बातें ज्ञात हुईं।"** – बद्रीनारायण – "विद्वान् रावल जी उस समय उस मन्दिर के मुख्य महन्त थे। और मैं उसके साथ कई दिन तक रहा। हम दोनों का परस्पर **वेदों और दर्शनों पर बहुत बाद–विवाद** रहा। जब उनसे मैंने पूछा कि इस परिस्थिति में **कोई विद्वान् और सच्चा योगी भी है व नहीं**, तो उसने यह जताने में बड़ा शोक प्रकट किया कि इस समय इस परिस्थिति में कोई ऐसा योगी नही है। परन्तु उसने बताया कि मैंने सुना है कि प्रायः ऐसे **योगी इसी मन्दिर के देखने के लिये आया करते हैं। उस समय मैंने यह दृढ़ संकल्प कर लिया कि समस्त देशों में और विशेषतः** पर्वतीय स्थलों में अवश्य ऐसे पुरुषों का अन्वेषण करूँगा।" पाठक को स्वामी जी का यह संकल्प ध्यान में रखना चाहिए। अलखनन्दा को पार करने का अत्यन्त कष्टदायक अनुभव करने के बाद स्वामी जी पुनः रावल जी के पास आते हैं। दूसरे दिन प्रातः उठ कर रामपुर की ओर चल पड़ते हैं। वहाँ स्वामी जी एक बड़े तपस्वी योगी के घर पहुँचते हैं। स्वामी जी लिखते हैं – "रात्रि उसी के घर काटी। वह पुरुष जीवित ऋषि और साधुओं में उच्च कोटि के ऋषि होने का गौरव रखता था। धार्मिक विषयों पर बहुत काल तक उसका–मेरा वार्तालाप हुआ। अपने संकल्पों को पहले से अधिक दृढ़ करके मैं आगामी दिन प्रातः उठते ही आगे को चल दिया।" यहां अपने संकल्पों को अधिक दृढ़ करने की जो बात स्वामी जी ने लिखी है, इसे पाठक को विशेष रूप से नोट करना चाहिए। – अलखनन्दा – वसुधारा – माना ग्राम – रामपुर – यहाँ पहुँचकर स्वामी जी रामगिरि के स्थान पर निवास करते हैं। स्वामी जी ने इस पुरुष को "पवित्राचार और आध्यात्मिक जीवन के कारण अति प्रसिद्ध", "विचित्र प्रकृति का पुरुष" और "पूरा योगी नहीं यद्यपि योग में कुछ गति" रखने वाला लिखा है। **स्वामी जी किस प्रकार के महानुभावों को मिलते हैं, यह भी ध्यान में रखने योग्य है।** – काशीपुर – द्रोणसागर – मुरादाबाद – सम्भल – गढ़मुक्तेश्वर – गंगातट – स्वामी जी ने लिखा है – "उस समय अन्य धार्मिक पुस्तकों के अतिरिक्त मेरे पास निम्नलिखित पुस्तकें भी थी – शिव सन्ध्या, हठ योग प्रदीपिका, केशाराणि संगीत। **प्रायः मैं इन्हीं पुस्तकों को यात्रा में पढ़ा करता था।** उनमें से कई पुस्तकों का विषय नाड़ी चक्र था। पर उनमें इस विषय का ऐसा लम्बा चौड़ा विवरण था कि पुरुष पढ़ता–पढ़ता थक जाता। मैं उन्हें कभी भी पूर्णतया अपनी बुद्धि में न ला सका और न ही समझकर स्मरण कर सका। अतः मुझे विचार हुआ कि न जाने ये सत्य भी हैं व नहीं।...एक दिन दैव संयोग से एक शव मुझे नदी में बहता हुआ मिला।" फिर स्वामी जी उस शव को बाहर निकालकर, काटकर, उसका अवलोकन कर इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि – **"वेदों, उपनिषदों, पातंजल और सांख्य शास्त्र के अतिरिक्त अन्य समस्त पुस्तकें जो विज्ञान और विद्या पर लिखी गयी हैं वे मिथ्या और अशुद्ध हैं।"** यह प्रसंग स्वामी जी का तत्कालीन उद्देश्य, उनके मन की दिशा, जिज्ञासा तथा अभीष्ट लक्ष्य को इंगित करता है। – फर्रुखाबाद – शृंगीराम पुर – "और शृंगीराम पुर से होकर छावनी की पूर्व दिशा वाली सड़क से कानपुर जाने वाला था, जब संवत् 1912 विक्रम समाप्त हुआ।" – स्वामी जी ने आगे लिखा है – "1913 वि. – अगले पाँच मास में कानपुर व प्रयाग के मध्यवतह्व अनेक प्रसिद्ध स्थान मैंने देखे।" – मिर्जापुर – "वहाँ एक मास से अधिक विंध्याचल अशोक जी के मन्दिर में निवास किया।" – काशी – "वहाँ जाके मैं उस गुफा में ठहरा जो वरणा और गंगा के संगम पर है। और जो उस समय भवानन्द सरस्वती के अधिकार में थी। वहाँ पर **कई शास्त्रियों अर्थात् काकाराम, राजाराम आदि से मेरा परिचय हुआ**, परन्तु वहाँ केवल 12 ही दिन रहा।" आगे लिखा है – "तत्पश्चात् **जिस वस्तु की खोज में था**, उसके अर्थ आगे को चल दिया।" **स्वामी जी का यह वाक्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इससे यही प्रकट होता है कि वे अपनी वही खोज में सर्वात्मना लगे हुए थे, अन्य कोई उद्देश्य नही था।** – चण्डालगढ़ – **"यहाँ मैंने चावल खाने सर्वथा छोड़ दिये और केवल दूध पर अपना निर्वाह करके दिन–रात योगविद्या के अध्ययन और अभ्यास में तत्पर रहा।" यह वाक्य भी उसी बात की घोषणा करता है कि उन दिनों में भी स्वामी जी योगाभ्यास को ही सर्वाधिक महत्त्व देते थे।** स्वामी जी ने आगे लिखा है – "चैत्र 1914 ई. वहाँ से आगे चला और वह मार्ग पकड़ा कि जिस ओर पर्वत थे और जहां से नर्मदा निकलती है, अर्थात् नर्मदा के स्रोत की ओर यात्रा आरम्भ की। मैंने कभी एक बार भी किसी से मार्ग नहीं पूछा, प्रत्युत दक्षिण की ओर यात्रा करता हुआ चला गया।" – **"मेरे मन में तो यही सोच थी कि किसी प्रकार नर्मदा का स्रोत देखूँ। अतः समस्त भय और कष्ट मुझे अपने**

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

सब दुःखों का मूलकारण अविद्या है

● स्व. श्री बलराज भल्ला

सब दुःखों का मूलकारण अविद्या है, ऐसा कई एक विद्वानों का विचार है। जेल में भी कैदियों के कई दुःखों का कारण उनकी अज्ञानता होती है। परन्तु यही नहीं कि इस अज्ञानता को निवृत्त करने के लिए कोई उपाय नहीं किया जाता, वरन् इस भ्रमजाल को कायम रखकर इसको फैलाने का प्रयत्न किया जाता है। साधारण कैदियों का तो कहना ही क्या है, बड़े पढ़े–लिखे कैदी और सरकार के मुलाज़िम भी अक्सर मामूली–मामूली जेल के नियमों से नावाकिफ़ होते हैं। इस पर लुत्फ़ तो यह है कि इन नियमों का पालन करना चाहते हैं– चाहे वे कैदी हों या अफसर– उनका जेल में कोई गुजारा नहीं। जेल–मैनुअल–जेल की लाल किताब क्या है, दो सौ वर्ष पहले के ब्राह्मणों के 'वेद' हैं जो शूद्रों को नहीं दिखलाये जा सकते। मैंने देहली जेल के अन्दर एक बार अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए इस लाल किताब को माँगा, परन्तु मुझे इसका अनधिकारी समझ कर इसको देखने का अधिकार न दिया गया। मुलतान में आकर मैंने तो कभी कानूनी तौर पर इस पुस्तक को पाने का प्रयत्न नहीं किया, परन्तु नगेन्द्र बाबू ने कई बार उस प्रिवेलेज्ड जमात के अंदर घुसने का प्रयत्न किया, जिसकी पहुँच इस पाक किताब तक है। परन्तु वे सदा अपने इस प्रयत्न में असफल रहे। मैंने भी कई बार अपने मेहरबानों से चंद घंटों के लिए इस पुस्तक को ले आने के लिए कहा, परन्तु जिन लोगों ने मिठाई, फल और कई प्रकार की निषिद्ध वस्तुओं को जेल के अन्दर लाने में कोई दरेग नहीं किया, उन्होंने भी इस काम को हाथ में लेने से इन्कार किया। जहाँ तक मुझे याद है, तकरीबन तीन साल के बाद मुझे पहली बार इस पुस्तक को पढ़ने का मौका मिला और यह भी एक अजीब तरीके से। लाल किताब की जिल्द फट जाने के कारण यह जिल्द बंधवाने के लिए अंदर आई। इस महकमे का एक कैदी मेरे पास आया और बोला– ''बाबू जी, मैनुअल आई हुई है, आओ, पढ़नी है तो पढ़ लो।''

जेल के अफसर कैदियों को कानून से बेबहरा रखना चाहते हैं। इसका कारण साफ ही है। साधारण कैदी जेलरों को खुदा से बढ़ कर मानते हैं, क्योंकि वे जानते हैं ज़िंदगी और मौत उनके हाथ में है। यदि कैदी जेल के नियमों से वाकिफ़ हो जाएँ, तो कुछ–न–कुछ जेलरों की आमदनी में फ़रक आ जाएगा और उनकी ताकत भी कम हो जाएगी। पाठक यह न समझें कि कानून की वाकफ़ियत कैदियों को जेल के दुःखों से रिहा कर सकती है, कदापि नहीं, जैसे ईश्वरीय नियमों का ज्ञान हमें केवल दीर्घायु और बलवान् बना सकता है, पर मौत से बरी नहीं कर सकता, इसी तरह जेल के नियमों का ज्ञान हमें किसी कदर नाजायज़ दुःखों से बचा सकता है। जेलरों की ताकत अथाह होती है, उसको परिमित करने के लिए तो किसी और ज्ञान की आवश्यकता होती है। यद्यपि मैंने अपनी आँखों से तो नहीं देखा, तो भी सुना है कि जेलर कभी–कभी जिस कैदी पर सख्त नाराज़ हो जाते हैं, उसको इस दुनिया के बन्धनों से आज़ाद कर देते हैं। मुझे इस में रत्तीमात्र भी सन्हेद नहीं, क्योंकि जो बातें मैंने अपनी आँखों देखी है, वे इस बात को साबित करने में हमें मदद देती हैं। एक बार दस बारह बलोच कैदियों ने दिन के समय सीढ़ी तैयार कर भागने की चेष्टा की। सीढ़ी दीवार पर लगा दी गई और उन्होंने चढ़ना शुरू कर दिया। आलार्म हो जाने कारण वे लोग अपना हौसला कायम न रख सके और उन्होंने एकदम इकट्ठे ही सीढ़ी पर चढ़ने का प्रयत्न किया। फिर साहिब, यह हुआ कि सीढ़ी टूट कर जमीन पर गिर पड़ी और सब भागने की चेष्टा करने वाले पकड़े गये। जेलर अपने बाबुओं और गारद के साथ वहाँ मौजूद था। उस आहाता के सब कैदी, जिसमें यह चेष्टा हुई थी, चार–चार कर बिठला दिये गये और सुपरिंटैंडैंट साहिब मौके पर आकर कैदियों से पुछताछ करने लगे। जब साहिब अपनी तफ़तीश कर रहे थे, तो उनसे पचास कदम की दूरी पर एक बारक के पीछे इन भागने वालों के नेता को पीटा जा रहा था। कानून किसी कैदी को किसी हालत में भी पीटने की आज्ञा नहीं देता, परन्तु जेल के अन्दर कानून मानने की अपेक्षा, न मानने को ज़्यादातर तसलीम किया जाता है। नेता के मुँह में कपड़ा देकर उसको इस कदर पीटा गया कि वह बिल्कुल बेहोश होकर मारपीट से अचेत हो गया। ऐसी हालत में दो अर्दली उसे उठाकर साहिब के सामने ले आए। साहिब ने कुदरतन इस खराब अवस्था का कारण पूछा। हाज़िर–जवाब दारोगा ने कह दिया, ''हजूर, यह सीढ़ी पर सबसे आगे था, इसलिए जब सीढ़ी टूटी, तो यह सबसे अधिक ऊँचाई पर से नीचे गिर पड़ा और बेहोश हो गया।'' साहिब की तसल्ली हो गई। डॉक्टर उसे उठाकर अस्पताल ले गये। शायद 24 घण्टे के बाद उसे होश आई और वह कई दिन तक अस्पताल में रहा यदि कोई कैदी उसी समय साहिब को सच कहने का साहस करता, तो हो सकता है किसी दुसरे कैदी से उसका सिर तुड़वा दिया जाता और मारने वाले को झूठी गवाही के जरीये बचा लिया जाता अथवा बाकी कैद के लिए उसका जीना नामुमकिन कर दिया जाता, अथवा रात के समय गला घोंट कर उसे मार दिया जाता और फिर कंबल से जंगले के साथ लटका कर अलार्म कर दिया जाता और कह दिया जाता कि वह फाँसी लेकर मर गया है। ऐसी अवस्था में जेल के अन्दर सच कहना अत्यन्त ही कठिन है। सबसे अच्छा काम, ऐसी हालत में जो आदमी मर सकता है, वह चुप रहना है। डाक्टर लोग भी ऐसे मौकों पर कुछ नहीं कर सकते। अब्वल तो ये लोग खुद रिश्वतखोर होते हैं, पर जो कोई दयानतदार भी हों, वे भी बिल्कुल सामर्थ्यहीन होते हैं। यदि सुपरिटैंडैंट ही बड़ा डॉक्टर हो, तब तो फैसला ही हो गया, क्योंकि सुपरिंटैंडैंट कई एक वजूहात से डॉक्टरों से अधिक दारोगा की ही बात मानता है। यदि जेल का मैडिकल अफ़सर, सुपरिंटैंडैंट से भिन्न कोई दूसरा पुरुष हो, तो भी कुछ नहीं बन सकता, कारण मैडिकल अफसर देसी और सुपरिंटैंडैंट अंग्रेज़ होता है। इन दोनों का आपस में मुकाबला ही क्या है? सच तो यह है कि जेलर की ताकतें और रिसोर्सिज (साधन) इतने विस्तृत होते हैं कि दयानतदार सुपरिंटैंडैंट को भी जेलरों से दबना पड़ता है। कहते हैं कैप्टन हसबैंड साहिब कैदियों की शिकायतें सुनने के लिए अकेले जेल में घूमा करते थे। यह बात कुदरतन जेलर को नागवार गुजरती थी, क्योंकि वह तो एक मिनट के लिए भी साहिब को अकेला नहीं छोड़ना चाहता था, ताकि कहीं कोई साहिब के कान न भर दे। जब साहिब कहने–सुनने पर भी इस आदत से न टले, तो जेलर ने एक रोज़ किसी कैदी से साहिब को पिटवा दिया। बस उसी रोज से आपका अकेले का दौरा बंद हो गया। इसका मतलब यह नहीं कि जेलरों को पकड़ने या उनको सुधारने का कोई तरीका ही नहीं। उनको पकड़ने के ढंग तो बहुत हैं, परन्तु वे यहाँ नहीं लिखे जा सकते, कारण जेलर भी इस पुस्तक को पढ़ सकते हैं और पढ़ कर अपने दाव–पेंच बदल सकते हैं।

नमूने के तौर पर मैं एक घटना पाठकों के समक्ष पेश करूँगा, जो उनको साबित कर देगी कि यदि सुपरिंटैंडैंट दयानतदार, चालाक और जेलर को ठीक करने पर तुला हुआ हो, तो उसके लिए कोई भी काम मुश्किल नहीं। ऐसे काम के लिए मेरी समझ में एक देसी सुपरिंटैंडैंट अंग्रेज़ से बेहतर है, बशर्ते कि वह देसी सुपरिंटैंडैंट रोब और आचार वाला हो। देसी और अंग्रेज़ में एक मोटा अन्तर तो यह है कि यहाँ देसी अपने भाई की रग–रग को जल्दी ही ताड़ सकता है, वहाँ अंग्रेज़ हमारी जुबान, आदत और जरूरियात को ही नहीं समझ सकता। देसी अपने मित्र के तजुरबे से काम लेता है, अंग्रेज़ को देसी बातें जानने के लिए किसी देसी की सलाह की जरूरत पड़ती है। परिणाम यह होता है कि अंग्रेज़ का शासन उसके सलाहकार पर निर्भर करता है। यदि उसका मुँह चढ़ा अच्छा आदमी है, तो सब काम अच्छा होता है, नहीं तो खुदा ही हाफ़िज। एक मोटा–सा उदाहरण मेरे कथन को स्पष्ट कर देगा। जब लाला रंगीराम तीन हफ्ते के लिए सुपरिंटैंडैंट बने, तो आप एक रोज़ अपनी स्त्री समेत शाम के समय रोटी देखने के लिए आ गये। आपकी और आपकी धर्मपत्नी की जेलर से क्या बात–चीत हुई, मैं नहीं कह सकता। परन्तु इसमें तो कोई संदेह नहीं कि आपकी धर्मपत्नी ने रोटी का एक टुकड़ा खा कर जेलर को कुछ कहा जिसका नतीज़ा दूसरे दिन ही प्रकट हो गया। इसी रोटी को सब सुपरिंटैंडैंट सैंकड़ों दफा देखते रहे, पर रोटी में कभी कोई फर्क न आया। बात यह है, जब कभी कोई कैदी रोटी की शिकायत करता है, तो सुपरिंटैंडैंट दारोगा से पूछता है 'क्यों जेलर?' साहिब को तो अपनी पहचान होती ही नहीं कि रोटी कच्ची है या पक्की, बुरी है या अच्छी। इसलिए उसे दारोगा की सलाह पर चलना पड़ता है। दारोगा अपने पैर पर आप ही कुल्हाड़ी कैसे चला सकता है? यदि हरन साहिब जैसा कोई चालाक सुपरिंटैंडैंट एक या दो साल के तजुरबे के बाद जेलर की बात पर इतबार नहीं भी करता, तो भी वह बहुत भलाई नहीं कर सकता। कारण अब उसका नया सलाहकार, चाहे वह उसका अर्दली हो या भंगी, जेलर की जान ले लेता है और जेल में अपना उल्लू सीधा करता है। एक समय हरन साहिब का भंगी जेल के अंदर ऐसा ताकतवर था कि जेलर भी उसे जी–जी कह कर बुलाया करता था। दूसरी तरफ रंगीराम को यह पूछने की जरूरत न थी कि रोटी कैसी है? वह तो खुद देख सकता था कि यह कच्ची और मिट्टी वाली है। जिस समय का वर्णन मैंने किया है, उस समय जेलर दो किस्म की कनक मंगवाया करता था। एक तो अच्छी, साहिब को दिखाने के लिए और सारी कनक का निरख लगाने के लिए। दूसरी खेतों का कूड़ा कैदियों को खिलाने के लिए। जब जेलर को ख्याल हुआ कि सुपरिंटैंडैंट जेल के कामों में दिलचस्पी लेता है और उसने एक बाबू को किसी कैदी से एक रुपया लेने के लिए नौकरी से अलग कर दिया है, तो उसने भी अपना इंतजाम शुरू किया। सुबह हर एक चक्की वाले को पाँच सेर साफ और सुथरी कनक पीसने के लिए मिल जाती। जब नौ बजे के बाद साहिब बाहर निकल जाते, तो बाकी पीसने के लिए गंदी कनक बाँटी जाती। ढंग तो अच्छा था, परन्तु दारोगा साहिब एक बात भूल गये कि उनका वास्ता एक देसी से पड़ रहा है। साहिब ठीक नौ बजे से बाहर निकल गये, रवानगी का सिगनल मिलते ही खराब कनक बंट गयी। परन्तु मालूम नहीं, देसी साहिब को क्या बात याद आ गयी कि आप पन्द्रह मिनट

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

गोधन का महत्त्व

● डॉ. रोचना भारती

सुश्रुत संहिता सूत्र के पैंतालिसवें अध्याय के अनुसार गोमूत्र शीघ्र पाचक, मस्तिष्क के लिए शक्तिवर्धक, कफ वात हरने वाला, नेत्र रोग, कुष्ठ रोग, अतिसार, सफेद दाग, कब्ज, दस्त, कृमिनाशक, खून की कमी, दमा, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप कैंसर आदि में उपयुक्त है।

गोमूत्र में पाए जाने वाले रासायनिक तत्त्व, विभिन्न प्रकार के प्रोटीन शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं तथा गोमूत्र में विभिन्न प्रकार के एन्जाइम्स पाचन क्रिया एवं उर्जा उत्पादन में सहायक होते हैं।

गोमूत्र में कैंसर रोधी क्षमता भी होती है, क्योंकि इसमें पाए जाने वाले एन्टी ऑक्सीडेन्ट तत्त्व कैंसर कारक पदार्थों में प्रमुख मुंक्त सक्रिय आयर्न फ्रि रेडीकल्स को नष्ट करते हैं तथा अन्य प्रकार के इन्टरफेरोन प्रोटीन एवं इम्युनोस्टीम्युलेटर प्रोटीन भी कैंसर के उपचार व रोकथाम में सहयोगी भूमिका निभाते हैं।

पशुओं में सर्वाधिक उपयोगी पशु मनुष्यों के लिए गौ है। गौ से मानव जाति का जीवन पालित एवं पोषित होता है। समस्त भूमंडल पर दूध की समस्या का हल इसी से हो रहा है। दूध, दही, मक्खन, घी, पनीर आदि से अनेक प्रकार के खाद्य पदार्थ एवं मिष्टान्नों का निर्माण होता है। यज्ञ में मिष्ट पदार्थों की आहुति दी जाती है, जो कई प्रकार के रोगाणुओं का नाश करती है।

दूध आहार की पूर्ति करके शरीर को पुष्ट करता है और जीवन देता है। दूध आहार की पूर्ति करके शरीर को रोगरहित भी करता है। दही पृथिवी पर अमृततुल्य है। बल एवं पुष्टि देता है। घृत शरीर को तथा इन्द्रियों को तेजस्जी बनाता है। बल और पुरुषार्थ को देने वाला है। गौ के केवल दूध मात्र से अनेक प्रकार से हमारी खाद्य, पुष्टि एवं आरोग्यता की व्यापक रूप में पूर्ति होती है।

गौ के मूत्र का उपयोग अनेक ओषधियों में होता है, गोमूत्र एवं गोबर अनेक दु:साध्य रोगों को नष्ट करने वाले हैं। गौमूत्र एवं गोबर से यह पृथिवी अपूर्व शक्तिशाली होती है और खाद की महान् समस्या को उत्तम रीति से हल करती है। आज देश में अनेक बड़े–बड़े खाद के कारखाने स्थापित किये जा रहें हैं। परन्तु कृषि, खाद, दूध, घृत, मक्खन, आरोग्यता और पुष्टि आदि का जो एकमात्र स्रोत गौ है। उसके संरक्षण एवं पालन की सर्वाधिक आवश्यकता है।

आर्ज्यं वै यज्ञः। = घी ही यज्ञ है

– मैत्रायणी संहिता 4.1.12

वेद ने कहा – **'आयुर्वे घृतम्, तेजो वै घृतम् पयोऽमृतम्'** – (घृत हमारे जीवन में आयु का प्रदाता है। घृत हमारे जीवन को तेज प्रदान करता है। दूध अमृत है।) जब घी और दूध हमारे शरीर में प्रविष्टि होकर आयु को, तेज को और जीवन को देने वाले हैं तब यदि हम यज्ञ के द्वारा उनको पृथिवी और अंतरिक्ष में व्याप्त कर दें तो समस्त जीवन को क्यों न जीवन प्राप्त हो, आयु प्राप्त हो तेज भी प्राप्त हो अर्थात् यज्ञ के द्वारा घी और दूध की आहुतियों से विश्व को जीवन और आयु तथा पुष्टि अवश्य प्राप्त होती है और विश्व के समस्त प्राणी रोगरहित होते हैं। गोघृत से ओझोन की पर्त को भी भरा जा सकता है।

तस्योत जायमानस्योल्बं आर्सीद्धिरण्ययः
कस्मै देवाय हविवा विधेम।

अथर्व. 4.2.8

(अर्थात् उत्पन्न हुए इस संसार की उल्ब=झिल्ली ओजोन तेजोमय है। उस सुखदायक ओजोन झिल्ली को हविषा=यज्ञ की आहुति द्वारा प्राप्त करें।)

इसीलिए वैदिक ऋषियों ने –

'गावो विश्वस्य मातरः' – कहा। गौएं विश्व की माता तुल्य हैं। विश्व का पोषण करने वाली हैं।

माता का पालन–पोषण करना चाहिए। उसकी हिंसा महापाप है। अतः वेद ने कहा –**'गां मा हिंसीः'** –गोवध योग्य नहीं है। उसको मारें नहीं। यदि उन गौओं की विधिपूर्वक सेवा, अर्चना होगी तो विश्व का कल्याण होगा।

उनकी उत्तम सेवा से वे – **'माध्वीर्गावो भवन्तु नः'** (यजु. 13। 20) (हमारे लिए मधुरता सम्पादन करने वाली हो जाती हैं।)

इसलिए वेद ने कहा है –

स हितासिविश्वरूप्यूर्जा माविश
औपत्येन।।

यजु. सं. 3.22

(हे गौ! तू अनेक रूपों से युक्त होकर यज्ञ कार्यों से संलग्न है। तू बल देने वाली होकर गोपालन के भाव से मुझ में प्रविष्ट हो।)

पर्यावरणविद् भी इस आणविक युग में गाय का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए कहते है कि –

"गाय के दूध में सबसे ज्यादा शक्ति है। जिन घरों को गाय के गोबर से लीपते हैं, उन घरों में रेडियो विकिरण का प्रभाव बिल्कुल नहीं पड़ता। अगर गाय के घी को आग में डाल कर उड़ाएं तो वायुमण्डल में एटोमिक रेडियेशन का प्रभाव बहुत कम ही पड़ेगा। इससे स्पष्ट होता है कि भारत की पुरानी संस्कृति, जिसमें गाय की पूजा होती थी तथा हवन में गाय के घी का उपयोग होता था बिल्कुल वैज्ञानिक थी। हवन से हवा शुद्ध हो जाती है, यह बात स्पष्ट है।"

तात्पर्य यह है कि ये सभी यज्ञ का आधार हैं। पशु–पक्षी जहाँ पर्यावरण जीवन बनाते हैं, वहीं मनुष्य के लिए भी बहुत उपयोगी हैं। मानव जीवन इनके बिना यत्किंचित् भी आगे नहीं बढ़ सकता। पशुओं के रहने से वायु भूमि आदि में दोष स्वतः दूर हो जाते हैं। पशुओं में गौ, अश्व, वृषभ, मृग सभी प्रकार के ग्राम्य एवं आरण्यक पशु मानवीय जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। गाय घृत, दुग्ध आदि से मनुष्य को हृष्ट–पुष्ट करती है, अश्व देश–देशान्तर के गमनागमन में सहायक होते हैं, वृषभ = बैल अन्न उत्पादन के साधन हैं, बकरी, भेंड़, आदि पशु भी वाणिज्य–व्यापार के कार्यों में सहायक होकर सुख पहुँचाते हैं, साथ ही ये सभी पशु यज्ञ से भी जुड़े हुए हैं। यज्ञ के लिए गोघृत को अत्यंत उपयोगी माना गया है। गाय यज्ञपूरक है, ऐसा ऋग्वेद में मन्त्र आया है –

या देवेषु तत्व मैरवन्त वासां सोमो
विश्वारूपाणि वेद।
ता अस्मभ्यं पवसा पिन्वमानाः
प्रजावतीरिन्द्र गोष्ठे रिरीह।।

ऋ. 10.169.3

अर्थात् गौएँ यज्ञ देवों व विद्वानों के लिए दुग्ध देती हैं, जिनके समस्त प्रकारों को यजमान जानता है। ऐसी बछड़े आदि से युक्त गौएं दूध को बढ़ाने वाली होवें, परमात्मा हमें ऐसी गौवें प्रदान करें।

जिस प्रकार सूर्य की किरणें अरोण्यप्राद होती हैं, तेजस्विता देने वाली होती हैं, बौद्धिक – आत्मिक बल प्रदान करती हैं, इन समस्त गुणों का आधान गौवों के शरीर में परमात्मा ने किया हुआ है। सूर्य के समान गौवें भी दुग्धादि के द्वारा शरीर को निरोग, शक्तिशाली, बौद्धिक बल और आत्मिक बल से युक्त करती हैं।

यज्ञ की प्रक्रिया को संपन्न करने में घृत–दुग्ध ही सर्वोत्तम उपयोगी साधन हैं। तैत्तरीय संहिता में कहा है – **गोर्भिर्यज्ञं दाधार (इन्द्रः)** – 2.5.2.6

(अर्थात् इन्द्र = जीवात्मा ने गौवों के द्वारा यज्ञ को धारण किया।)

अग्नि के इस तेज के दो गुण हैं। एक तो अग्नि गतिशील है एवं स्वतः गति करती है। अग्नि के इस गुण से युक्त अजा बकरी पशु है। बकरी के इस गुण विद्यमानता से सोमयागादि यज्ञों में, महावीर पात्र की प्रज्वलन प्रक्रिया में गोदुग्ध के साथ अजा–बकरी का दुग्ध भी डालते हैं, जिससे मेघ संघात होने में महत्त्वपूर्ण सहयोग होता है। इन उपयोगी पशुओं की रक्षा के लिए घोषणा की गई है–

यदि नो गां हिंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।
तंत्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसौ अवीरहा।।

अथर्व. 1.16.4

(अर्थात् जो हमारी गाय घोड़ा तथा पुरुष को मारता है, उसे सीसे की गोली से बींध डालें, जिससे इन उपकारी पशुओं एवं पुरुषों का नाश न होवे।)

पर्यावरण को यथावस्थित रखने में पशु–पक्षी अत्यन्त सहायक हैं। इनके सान्निध्य से पृथ्वी, वायु आदि के दोष दूर होते हैं –

सं संस्रवन्तु पशवः समश्वा समु पूरुषाः।
सं धान्यस्य या स्फातिः संस्राव्येण हविषा जुहोमि।।

अथर्व. 2.26.3

इसका तात्पर्य यह है समस्त पशु तथा समस्त मानव मिलकर रहें। पशु मानव के कल्याण के लिए हैं, उन्हें हिंसित या पीड़ित न करें और जो धन–धान्य की मनुष्य के समीप सम्वृद्धि है उसे भी कोमल भावना पूर्ण मन से मिलकर उपभोग करें, क्योंकि सम्वृद्धि की प्राप्ति उपयोगिता संगतिकरण में है। पशु–पक्षी मिलकर धनधान्य का उपभोग करते हैं, तभी पुष्टि मिलती है।

अतः वेदों में पशुओं के संरक्षण का बहुशः कथन है –

मा नो हिंसिष्ट द्विपदो मा चतुष्पदः।

अथर्व .11.2.1

(अर्थात् हमारे दोपाये पशुओं को न मारो, चौपाये पशुओं को मत मारो।)

ये पशु–पक्षी मलिनता को दूर कर स्वच्छ वातावरण प्रदान करते हैं। इनकी हिंसा होने पर इनकी चीत्कारें मृत्यु के मुंह में धकेलती हैं और दैविक प्रकोपों को उत्पन्न करती हैं, ओजोन पर्त को भी हानि पहुँचाती हैं। अतः पशु–पक्षियों की सुरक्षा पर्यावरण के निर्माण में अत्यन्त आवश्यक हैं। यज्ञादि से शुद्ध पवित्र पर्यावरण ही इन्हें भी स्वस्थ व सुरक्षित रख सकता है।

पशु–पक्षियों के कारण पर्यावरण सुरक्षित रहता है। इनसे भूमि वायु के दोष दूर होते हैं। यही कारण है कि वेदों में पशुओं के संरक्षण के लिए कई मन्त्र हैं।

पशून् पाहि।। (यजु. 1.1)

अर्थात् पशुओं की रक्षा करो। संगतिकरण की भावना से मनुष्य उनका संरक्षण करे। पशु–पक्षी के लिए प्रार्थना की गई है –

इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्वि पदे शं चतुष्पदे।

यजुर्वेद – 7

(हे परम ऐश्वर्यशाली! आपका ऐश्वर्य सारे विश्व में बिखरा हुआ है। यह ऐश्वर्य दो पैरों वाले और अधिक पैरोंवालों के लिए भी सुख–शांति और कल्याणकारी हो।)

'यज्ञ से होगा सुनहरा कल' से साभार

हमारा बनानेवाला

● गंगा प्रसाद उपाध्याय

दो प्रकार की वस्तुएँ

"हमारा बनानेवाला कौन है?" यह प्रश्न हर एक बुद्धिमान् पुरुष के मन में उठता है। संसार में दो प्रकार की वस्तुएँ दिखाई देती हैं। एक वे जिनको किसी मनुष्य या अन्य प्राणियों ने बनाया है, और दूसरी वे जिनका बनानेवाला दिखाई नहीं पड़ता। हम बया आदि को घोंसला बनाते देखते हैं। इसलिए संसार में जहाँ कहीं घोंसला दिखता है वहाँ तुरन्त ही यह भी विचार हो जाता है कि इसको किसी चिड़िया ने बनाया है। इसी प्रकार मकान, मेज़ आदि को भी मनुष्यों द्वारा बनते देखा है। इसलिए ताजमहल आदि बड़े-बड़े मकानों या रेल आदि यानों को देखते हैं तो देखते ही यह परिणाम निकाल लेते हैं कि किसी-न-किसी मनुष्य ने ही इनका निर्माण किया है। यह हमारा अनुमान-प्रमाण है। यह कभी गलत नहीं होता, हमको इसकी सत्यता में कोई सन्देह नहीं है। यह बात निश्चत है। वे लोग भी, जो अनुमान-प्रमाण की प्रामाण्यता स्वीकार नहीं करते, अपने जीवन के व्यवहार से यही सिद्ध करते हैं कि अनुमान-प्रमाण अवश्य है। यदि वे किसी पुस्तक को देखते हैं तो झट पूछते हैं – यह किसने बनाई, कहाँ छपी इत्यादि। उनको कभी सन्देह नहीं होता कि सम्भव है यह पृथिवी में से वनस्पतियों की भाँति उगी हो अथवा वृक्ष का फल-फूल के समान लगी हो।

कलाकार को अपनी कला का ज्ञान होता है

परन्तु संसार में बहुत-सी वस्तुएँ हैं जिनको हमने या किसी अन्य मनुष्य ने कभी किसी को बनाते नहीं देखा। 'पहाड़, नदियाँ, सूर्य, चाँद आदि को किसने बनाया', यह भी प्रश्न है। 'मनुष्य को किसने बनाया', यह भी प्रश्न है। जो यह कह देते हैं कि मनुष्य को माँ-बाँप ने बनाया, वे तो ऐसा कहकर अपनी अज्ञता ही दर्शाते हैं, क्योंकि माँ-बाँप को मनुष्य के शरीर की रचना का कुछ भी ज्ञान नहीं। जो घड़ी को बनाता है वह घड़ी के पुर्जों को भली प्रकार जानता है। बिना पुर्जों का ज्ञान हुए कोई किसी चीज़ को बना ही नहीं सकता। माँ-बाप को बच्चों के शरीर के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं। जो घड़ी को बना सकता है वह घड़ी को सुधार भी सकता है। यदि माँ अपने बच्चों को बनानेवाली होती तो रोगी बच्चे को डॉक्टर तथा वैद्यों के पास लिये-लिये न फिरा करती। जिस माँ को यह नहीं मालूम कि मेरे पेट में लड़की है या लड़का काना है या अंधा, लूला है या लँगड़ा, उसको बच्चे का बनानेवाला कभी नहीं कह सकते। कुतिया कुत्तों के पिल्लों को उसी प्रकार जनती है जैसे स्त्री मनुष्य के बच्चों को। चिड़िया उसी प्रकार अण्डे देती है जैसे चीटियाँ। परन्तु न स्त्री को, न चिड़िया व चींटी को अपने बच्चों के विषय में कुछ भी ज्ञान है। कुत्ते के पिल्ले की शरीर-रचना उस विचित्र से विचित्र कल से भी विचित्र है जिसको बुद्धिमान से बुद्धिमान मनुष्य बनाता है। यदि कुतिया पिल्ले को बनानेवाली होती तो वह अवश्य ही उस बुद्धिमान मनुष्य से अधिक बुद्धिमती होती।

मनुष्य, सूर्य, चाँद तथा सृष्टि की अन्य वस्तुओं के निर्माण के विषय में कई प्रकार के मत हैं। एक मत तो यह है कि इनको बनानेवाली सूक्ष्म, अदृष्ट, पूर्णज्ञान तथा शुद्ध स्वभाव और महती शक्तिशाली एक सत्ता है जिसका नाम ईश्वर है। भिन्न-भिन्न लोग इसको भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं – **एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति** (ऋग्वेद 1/164/46) कोई उसको खुदा कहता है, कोई गॉड, कोई परमेश्वर, कोई ब्रह्म इत्यादि। इस सत्ता के माननेवाले आस्तिक कहलाते हैं। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपने को नास्तिक कहते हैं और उस सत्ता को नहीं मानते। उनके मन में भी आस्तिकों के समान यह प्रश्न उठता कि हमको किसने बनाया है? परन्तु वे इसका उत्तर भिन्न प्रकार से देते हैं। एक कहता है कि इस सृष्टि का बनानेवाला कोई नहीं। केवल स्वभाव या कुदरत से सब चीज़ें बन जाती हैं। जैसे शराब बनाने के पदार्थों को एक प्रकार से इकट्ठा कर देने से नशेवाली शराब स्वयं ही बन जाती है, या चूना और हल्दी मिला देने से रोरी बन जाती है, इसी प्रकार भिन्न-भिन्न परमाणुओं के परस्पर मिलने से सृष्टि की समस्त वस्तुएँ बनती रहती हैं। उनसे पूछा जाय कि सूर्य को किसने बनाया है? तो वे उत्तर देते हैं 'कुदरत ने'। कुछ लोग कहते हैं कि सृष्टि को किसी ने नहीं बनाया। अकस्मात् ही (By Chance) यह इस प्रकार की बन गई है। बहुधा देखा गया है कि कोई कीड़ा पृथिवी पर रेंगते-रेंगते कोई अक्षर भी बना देता है। वस्तुतः कीड़े का यह तात्पर्य नहीं होता कि अमुक अक्षर बने। इसी प्रकार सृष्टि भी अकस्मात् ही बन जाती है। वे कहते हैं कि यदि वस्तुतः कोई सृष्टि का बनानेवाला होता तो सृष्टि ऐसी बुरी न होती जैसे आजकल दिखती है। एक संस्कृत का कवि कहता है –

गन्धं सुवर्णे फलमिक्षुदण्डे, नाकारि पुष्पं खलु चन्दनेषु।
विद्वान् धनाढयो नृप दीर्घजीवी, धातुस्तदा कोऽपि न बुद्धिदोऽभृत्।।

अर्थात् न सोने में सुगन्ध दी, न ईख में फल दिया, न चंदन में फूल दिया, न विद्वान् को धन दिया और न राजा को दीर्घजीवी किया। इससे प्रतीत होता है कि सृष्टि के रचनेवाले को बुद्धि देनेवाला कोई था ही नहीं।

यह तो कवि की कविता रही। परन्तु बहुत-से दार्शनिकों ने भी सृष्टि में दोष दिखलाने की कोशिश की है। कोई कहता है कि यदि सूर्य को इस प्रकार से बनाया जाता कि रात में भी प्रकाश दे सकता तो अच्छी बात होती। कोई कहता है कि मनुष्य की आँख ऐसी बुरी बनाई हैं कि इसमें बहुत-सी त्रुटियाँ रह गई हैं। यदि वस्तुतः कोई ज्ञानवान् शक्ति इसको बनाती तो इन त्रुटियों को रहने न देती। कोई कहता है कि संसार में इतना दुःख है कि हम कभी इनको पूर्णज्ञानी ईश्वर का बना हुआ नहीं मान सकते। मनुष्यों के सिर कोई न कोई विपत्ति आती ही रहती है – कहीं भूकम्प आया, कहीं बाढ़ आ गई, कहीं जंगल में आग लग गई। जिस संसार में इतना दुःख हो उसको सर्वज्ञ, शुद्ध, हितचिंतक और प्रेममय ईश्वर का बना हुआ मानना मूर्खता नहीं तो क्या है? इससे वे यही परिणाम निकालते हैं कि घुणाक्षर-न्याय के अनुकूल परमाणुओं के अकस्मात् (By Chance) मिलने से ही सृष्टि बनती है। इस प्रकार सृष्टि के कारण चार बताए जाते हैं –

(1) ईश्वर, (2) स्वभाव, (3) कुदरत, (4) अकस्मात् घुणाक्षर न्यायवत्।

हम अंतिम मत से आरम्भ करके क्रमशः एक-एक की संक्षिप्त मीमांसा कहते हैं।

जब लेखक के बिना पुस्तक नहीं लिखी जा सकती तो स्रष्टा बिना सृष्टि कैसे बन गई?

वस्तुतः सृष्टि के किसी काम को देखकर यह प्रतीत नहीं होता कि घुणाक्षर-न्यायवत् सृष्टि बन गई हो। हमको प्रत्येक कार्य में एक विचित्र नियम दिखाई देता है। यदि घुणाक्षर-न्याय के समान सृष्टि होती तो सायंस अर्थात् विज्ञान की कभी उन्नति नहीं हो सकती थी। 'विज्ञान' का क्या काम है? यही न कि उन नियमों का पता लगाए जो सृष्टि में कार्य कर रहे हैं। भिन्न-भिन्न विज्ञान भिन्न-भिन्न नियमों की मीमांसा करते हैं। रात-दिन वैज्ञानिक लोग इन्हीं नियमों की खोज में लगे रहते हैं। एक पुरुष ने ठीक कहा है कि यदि छापेखाने के कम्पोज़ीटर लोग भिन्न-भिन्न टाइपों को करोड़ों वर्षों तक उछालते रहें तो भी कभी शेक्सपियर के नाटकों को नहीं बना सकते। शेक्सपियर के नाटकों में जो अक्षरों की योजना है वह अकस्मात् नहीं, किन्तु नियमपूर्वक है और उससे शेक्सपियर की बुद्धि का बोध होता है। यदि अक्षरों के स्वयं उछलने से पुस्तकविशेष नहीं बन सकती तो परमाणुओं के एक-दूसरे के साथ मेल खाते रहने से अकस्मात् सूर्य और चाँद जैसे प्रकाशक लोक, नदी, पर्वत, जैसी चमत्कारपूर्वक वस्तुएँ और शरीर जैसी अद्भुत कलें नहीं बन सकतीं। जो पुरुष सृष्टि में भिन्न-भिन्न त्रुटियाँ बताते हैं उनकी दृष्टि अति क्षुद्र है। वे सृष्टि के एक अंश को ही देखते हैं और मनमानी बात को आदर्श समझ लेते हैं। उनका हाल उस बालक के समान है जो अपनी पट्टी पर लकीर खींचके अपने पिता से कहता है कि "तुम छोटे-छोटे अक्षर क्यों लिखते हो? मेरे समान बड़े-बड़े क्यों नहीं लिखते?" जो पुरुष आँख की बनावट में दोष निकालते हैं उन्होंने आज तक दोष-रहित एक आँख भी बनाकर नहीं दी और न वह आँख, जिसको ये लोग दोष-रहित कहना चाहते हैं इस प्रकार की है कि उसमें दूसरा कोई दोष न निकाल सके। कल्पना करो कि मैंने रोटी पकाने के लिए एक मकान बनवाया। जो पुरुष उसको सोने का कमरा बनाना चाहता है उसको उसमें अनेक दोष प्रतीत होंगे, और जिस कमरे को उसने प्रयोजन के विचार से आदर्श कहा उसको वह पुरुष जो उसे स्वाध्याय का कमरा बनाना चाहता है दोषयुक्त कहेगा। यही हाल सृष्टि का है। वर्षा हो रही है। किसान खुश हो रहा है क्योंकि खेती को उससे लाभ होगा। अनाज का व्यापारी रो रहा है क्योंकि उसका उद्देश्य महँगा अनाज बेचना है। वर्षा होगी तो अनाज बहुत होगा और महँगा न बिक सकेगा। सृष्टि को भिन्न-भिन्न मनुष्यों के दृष्टिकोण से नहीं बनाया गया। न तो उसमें त्रुटियाँ हैं, न वह आकस्मिक बन गई है।

'नेचर' क्या है? मात्र शब्द – जाल

जो लोग कहते हैं कि सृष्टि को कुदरत (Nature) ने बनाया है वे तो शब्द-जाल में फँसे हुए हैं, क्योंकि कुदरत या नेचर बनानेवाले का नाम नहीं किन्तु चीज़ के बनाने का ही नाम है। यदि पूछा जाय कि 'रोटी किसने बनाई' और उत्तर दिया जाय कि 'रसोइये ने' तो यह ठीक उत्तर न होगा, क्योंकि 'रसोई' के अंतर्गत ही रोटी आ जाती है। इसी प्रकार कुदरत या नेचर के अंतर्गत ही संसार की सब वस्तुएँ आ जाती हैं। बहुत-से लोग किसी कार्य का कारण न बतलाकर उस कार्य का ही दूसरा नाम 'कारण' के स्थान में ले देते हैं – यह बड़ी भूल है। जैसे यदि किसी वैद्य से पूछो कि 'अमुक पुरुष की मृत्यु का क्या कारण है?' तो वह कहता है, 'हृदय की गति रुक गई।' यहाँ वस्तुतः 'हृदय की गति रुक जाना' और 'मृत्यु' दोनों पर्यायवाची (समानार्थक) हैं; कारण और कार्य नहीं। 'मृत्यु ही हृदय की गति का रुकना है' और 'हृदय की गति रुकना ही मृत्यु है' तो इसका यह उत्तर कदापि न होगा कि उसे ज्वर है। 'ज्वर' बीमारी का एक रूप है, कारण नहीं। इसी प्रकार कुदरत या नेचर ही सृष्टि है और सृष्टि ही कुदरत या नेचर है। बीज का पृथिवी में पड़कर खाद आदि की सहायता से उग आना ही सृष्टि है और यही कुदरत या नेचर है। नेचर इसके अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु नहीं।

क्रमशः

'गंगा ज्ञान-सागर' से साभार
प्रस्तुति प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

वैद्यक विद्या

● डॉ. अशोक आर्य

पाक विद्या की ही भाँती वैद्यक विद्या भी महिलाओं के लिए विशेष महत्त्व रखती है। प्रत्येक परिवार में कोई न कोई व्यक्ति किसी न किसी रोग से ग्रसित हो जाता है। इसके प्रत्येक छोटे–छोटे रोग, बिमारी की चिकित्सा के लिए उसे चिकित्सक के पास ले जाना संभव नहीं होता है। यदि छोटी–छोटी बिमारी में चिकित्सक के पास जाया जाए तो बहुत–सा धन तथा बहुत–सा समय नष्ट तो होता ही है, साथ ही साथ अनेक प्रकार के भय भी पैदा हो जाते हैं। इस सब से बचने के लिए वेद ने अनेक प्रकार के घरेलू उपाय दिए हैं, जिनके प्रयोग से पारिवारिक परिचर्या से ही रोगी को उत्तम स्वास्थ्य मिल सकता है। इसलिए वेद का कहना है कि प्रत्येक महिला के लिए साधारण वैद्यक की शिक्षा से शिक्षित होनी चाहिए। अतः कुछ घरेलू उपचार की जानकारी हमारी महिलाओं के लिए होना आवश्यक है। आओ वेद में पारिवारिक चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करें।

वैद्यक शिक्षा भी नारी के लिए आवश्यक

नारी को परिवार चलाना होता है, परिवार का पालन करना होता है और परिवार का रक्षण भी करना होता है। पालन और रक्षण के लिए अनेक बार इस प्रकार की अवस्थाएँ आ जाती हैं जब कोई परिजन रुग्ण हो जाता है। इस रुग्ण परिजन का आरम्भिक उपचार घर से ही माताएँ आरम्भ कर देती हैं ताकि उसका रोग रुके नहीं तो कम से कम बढ़े भी नहीं। साधारणतया माताएँ इस प्रकार के घरेलू उपचार करती हैं और उससे रोग के इस प्रकार के निदान भी करने में सफल होती हैं कि अनेक बार बड़े–बड़े अनुभवी चिकित्सक भी आश्चर्य से चकित हो जाते हैं। इसलिए ही वेद का आदेश है कि महिलाओं को वैद्यक विद्या का भी ज्ञान होना आवश्यक होता है। इस सम्बन्ध में ऋग्वेद तथा यजुर्वेद में अनेक मंत्र *मिलते हैं। वेद के इन मंत्रों में से एक मन्त्र* अवलोकनीय है :–

या ओषधीः सोमाराज्ञीर्बह्वीः शतचिक्षणाः।
तासामसि त्वमुत्तमारं कामाय शꣳ हृदे।।

यजु. 12.92

इस मन्त्र के द्वारा यजुर्वेद ने स्त्रियों के लिए स्पष्ट संकेत करते हुए कहा है कि स्त्रियों को अन्य शिक्षाओं के अतिरिक्त वैद्यक की शिक्षा में भी पारंगत होना चाहिए ताकि घर के किसी सदस्य पर जब भी कभी स्वास्थ्य सम्बंधी संकट आए तो उसका यथा समय तथा यथाचित उपचार किया जा सके।

मन्त्र में एक शब्द आया है 'उत्तमा'। इस उत्तमा शब्द से अभिप्रायः विदुषी स्त्री से लिया गया है। विदुषी स्त्री उसे कहा जाता है जो कल्याणकारिणी हो तथा जो हृदय के लिए समर्थ इच्छा सिद्धि के योग्य होती है।

प्रश्न उठता है यह कल्याणकारिणी महिला कौन हो सकती है? इसके उत्तर के लिए हम कह सकते हैं कि वह महिला जो अपने परिजनों और पास–पड़ौस के लिए सदा सुख की कामना करे तथा उनके लिए सदा सुख के उपाय करे, उसे हम कल्याणकारिणी महिला कह सकते हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि सबके कल्याण के उपाय वह महिला जानती हो। यदि वह वैद्यक नहीं जानती तो सब के कल्याण का उपाय वह कैसे कर सकती है? रोग से ग्रसित व्यक्ति कभी भी अपने आप को सुखी नहीं मान सकता। रोग से ग्रसित व्यक्ति कभी भी विश्राम की अवस्था में नहीं रह सकता। यदि वह कुछ भी काम नहीं कर रहा, केवल बिस्तर पर है, तो भी वह दुःखों से इतना दुःखी होता है कि एक क्षण के लिए भी वह इस विश्राम का आनंद नहीं उठा पाता। सदा रोता रहता है, सदा तड़पता रहता है। सदा चिंतित रहते हुए परमपिता परमात्मा के लिए भी बुरे शब्द बोलने लगता है। इस प्रकार के व्यक्ति को यदि तत्काल चिकित्सा देते हुए उसे स्वास्थ्य लाभ न मिले तो उसके कष्ट निरंतर बढ़ते चले जाते हैं। इन कष्टों को न सहते हुए अनेक बार उसकी मृत्यु भी हो जाती है।

इस सबके निराकार के उपाय यदि माता, पत्नी अथवा घर की कोई महिला नहीं जानती तो इस प्रकार के रोगी की तत्काल चिकित्सा तो क्या उसे प्राथमिक उपचार तक नहीं मिल पाता तथा उसका रोग तेज़ी से बढ़ता ही चला जाता है। रोग की भयंकरता अनेक बार उसकी मृत्यु का कारण भी बन जाती है। हमारी विदुषी माताएँ प्राचीन काल से ही अपने जीवन को वेदानुसार चलाती रही हैं, वेद के आदेशों को अपने जीवन का अंग बनाते हुए तदनुरूप कार्य करती रही हैं। इस कारण परिवारों में तथा परिवार के किसी भी सदस्य को तो क्या अपने अड़ौस–पड़ौस के किसी भी व्यक्ति को वह कष्ट न आने देती थी और यदि कभी किसी को कोई कष्ट आ भी जाता था तो वह अपने प्रयास अथवा उपचार से उसके सब कष्टों का निराकरण कर उसका कल्याण करती थी। इसलिए ही माता को कल्याणकारिणी कहा गया है क्योंकि वह वेदानुसार सब विद्याओं को ग्रहण करती थी यहाँ तक की वैद्यक को भी जानती थी।

अपने परिवारों पर हम यदि दृष्टि डालें तो आज भी हमारे परिवारों में इस प्रकार की महिलाएँ हैं जो वेद को तो नहीं जानती किन्तु वेद की इस शिक्षा को आज भी जानती है कि वैद्यक शिक्षा महिलाओं के पास होनी चाहिए। इस बात को वह स्वयं ही ग्रहण किये हुए है और जब भी कभी परिवार में किसी को कोई रोग हो जाता है तो वह कुछ घरेलू उपचार से ही उसे ठीक कर देती हैं। विशेष रूप से बाल रोगों में तो यह महिलाएँ पारंगत हैं। इस प्रकार पास–पड़ौस की महिलाएँ अपने बच्चों का उपचार इन माताओं से कराती हैं। इससे बच्चे को तत्काल स्वास्थ्य लाभ तो होता ही है धन भी व्यय नहीं करना होता, क्योंकि यह माताएँ निःशुल्क उपचार करती हैं। इस कारण ही हम कहते हैं कि हमारी यह माताएँ कल्याणकारी होती हैं तथा कल्याणकारी होने के साथ ही साथ यह हृदय के लिए समर्थ इच्छा सिद्धि की शक्ति से योग्य होती हैं। इस प्रकार की चिकित्सीय विद्या से निपुण महिला से प्रार्थना है कि वह अपने परिवार के साथ–साथ अन्य का भी उपचार करे तथा औषध के प्रयोग, बनाने की विधि आदि का उपदेश भी करे।

यजुर्वेद्भाष्य में स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने इस मन्त्र का इस प्रकार अर्थ किया हैः–

''स्त्रियों को चाहिए ओषधि विद्या का ग्रहण अवश्य करें। क्योंकि इसके बिना पूर्ण कामना, सुख प्राप्ति और रोगों की निवृति कभी नहीं हो सकती।'' इस प्रकार स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी इस मन्त्र के अर्थ के द्वारा यह स्पष्ट संकेत किया है कि स्त्रियों को ओषध विद्या का ज्ञान अवश्य ही होना चाहिए क्योंकि इसके बिना कोई कामना पूर्ण न होगी तथा कोई सुख नहीं मिल सकेगा। इसके बिना रोगों की निवृति भी नहीं हो सकेगी। इसलिए महिलाओं के लिए चिकित्सीय ज्ञान का होना आवश्यक है और इस ज्ञान को पाने के लिए महिलाओं के लिए आवश्यक है कि वह वेद की शरण में जाए, वेद का स्वाध्याय करे। यदि स्वयं वेद का यह ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकती तो इसे पाने के लिए वह किसी आचार्य की शरण में जाए, किसी गुरुकुल में जाकर गुरु के चरणों में बैठने का अवसर प्राप्त करे अथवा किसी स्कूल व कॉलेज के अध्यापक अथवा प्राध्यापक के चरणों में बैठकर वेद के इस चिकित्सीय ज्ञान को प्राप्त करके जन कल्याण के कार्यों में लगे तथा दूसरों को भी इस ज्ञान की प्राप्ति का उपदेश दे।

1/61 रामप्रस्थ ग्रीन वैशाली
गाजियाबाद
मो. 09718528068

आर्य जगत् सम्बंधी घोषणा

(फार्म-4 नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशन का स्थान	:	आर्य समाज बिल्डिंग, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001
2.	प्रकाशन–अवधि	:	साप्ताहिक
3.	मुद्रक का नाम	:	एस.के. शर्मा
4.	क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
5.	मुद्रक का पता	:	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001
6.	प्रकाशक का नाम	:	एस.के. शर्मा
7.	क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
8.	प्रकाशक का पता	:	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001
9.	सम्पादक का नाम	:	पूनम सूरी
10.	क्या भारत का नागरिक है?	:	हाँ
11.	सम्पादक का पता	:	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001
12.	उन सभी व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार–पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के हिस्सेदार हों–	:	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001

मैं एस के शर्मा एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर दिये गये विवरण सत्य है।

दिनांक 01-03-2019

एस.के.शर्मा
प्रकाशक

☞ पृष्ठ 02 का शेष

यज्ञ प्रसाद

संकल्प इस पवित्र यज्ञाग्नि में समाप्त हो रहे हैं। मुण्डक ऋषि कहते हैं कि जो यजमान इन उत्तप्त और प्रदीप्त अग्नि–ज्वालाओं में नियमित रूप से आहुतियाँ देता रहता है, उसे सूर्य की रश्मियाँ दिव्य–लोक में ले जाती हैं, अर्थात् वह अपने आत्मा में दिव्य आनन्द की अनुभूति करता है।

मुण्डक ऋषि के शब्दों में, अलंकार–रूप से, यज्ञ की तेजोमय आहुतियों से आपूरित सूर्य–रश्मियाँ यजमान का अभिनन्दन करती हुई प्रिय शब्दों में कहती हैं कि "हे यजमान! आओ, ऊपर को उठो, तुम्हारा यह सुकृत तुम्हें 'ब्रह्मलोक' की ओर ले जानेवाला होगा।"

आध्यात्मिक आह्लाद देनेवाले ऋषि के ये शब्द कितने भावपूर्ण हैं! यज्ञ वह सोपान है जिस पर स्थिरता, धैर्य और सबसे अधिक पूर्ण श्रद्धा से चढ़ता हुआ मानव परम–पद को प्राप्त कर सकता है। इसीलिए वेद कहता है कि "हे मनुष्य! तू सावधान होकर इस अनुष्ठान को कर और अपने हृदय में दिव्य भावनाओं को, यज्ञ की प्रदीप्त अग्निशिखाओं के सहारे, उच्चता की ओर प्रेरणा करनेवाला बन। जिस प्रकार सूर्य की किरणें पृथिवी के ऊपर और अन्तरिक्ष में फैलकर सर्वत्र प्रकाश करती हैं, इसी प्रकार यज्ञ की ज्योति तुम्हारे अन्तरात्मा को पूर्ण रूप से आलोकित करनेवाली हो।" *(अथर्ववेद 2/7/3)*

क्रमशः

☞ पृष्ठ 04 का शेष

स्वामी दयानन्द की 'अज्ञात–जीवनी'...

संकल्प से न रोक सकते थे।" – "मैंने उन सबसे कहा कि मैं काशी से आया हूँ और अब नर्मदा नदी के स्रोत की ओर यात्रा के लिए जा रहा हूँ। इतना पूछ कर वे सब मुझे अपनी उपासना करने में निमग्न छोड़ कर चले गये।" – "तत्पश्चात् अपने **संध्या आदि से अवकाश प्राप्त करके** मैं उठा और यात्रा के लिये चला।" **स्वामी जी के ये वाक्य भी विशेष महत्त्व के हैं। सन्ध्या–उपासना का यह प्राधान्य उनकी प्रवृत्ति की दिशा का द्योतक है।** यह भी ध्यातव्य है कि काशी से नर्मदा का स्रोत लगभग 450–500 किलोमीटर की दूरी पर है। 'पूना–प्रवचन' का अन्तिम अर्थात् 15वां व्याख्यान जो स्वामी जी ने 4 अगस्त 1875 को दिया, वह स्वयं के जीवन–चरित्र के विषय में ही था। उसमें स्वामी जी ने अलखनन्दा के उपर्युक्त प्रसंग का उल्लेख करते हुए कहा – **"हिमालय पर्वत पर पहुँच कर विचार हुआ कि यही शरीर गला दूँ। फिर मन में आया कि यथार्थ ज्ञान प्राप्त करके बाद शरीर छोड़ना चाहिए। यह निश्चय करके मैं मथुरा में आया। वहां मुझे एक धर्मात्मा संन्यासी गुरु मिले। उनका नाम स्वामी विरजानन्द था।" यहाँ भी यह ध्यातव्य है कि हिमालय में जो "यथार्थ ज्ञान प्राप्त" करने का निश्चय किया था, उसी की पूर्ति हेतु स्वामी जी का मथुरा में आगमन हुआ था।**

हरविलास शारदा रचित स्वामी जी के प्रसिद्ध अंग्रेज़ी जीवनचरित्र के 19वें अध्याय में स्वामी जी अपने जीवन काल में जिन–जिन स्थानों पर गए थे, उन सभी स्थानों के नाम तथा वहाँ उनके आगमन तथा प्रस्थान के समय या वर्ष के निर्देश सहित एक पूरी सूची दी गई है। इस सूची के अनुसार 1852 से लेकर 1859 ई. तक अर्थात् आबू से लेकर नर्मदा के स्रोत के अन्वेषण काल पर्यन्त की लगभग सात वर्ष की समयावधि में स्वामी जी ने कुल 40 स्थानों की यात्रा की थी।

अन्ततः स्वामी जी 14 नवम्बर 1860 (कार्तिक शुक्ला द्वितीया, संवत् 1917 वि.) के दिन मथुरा पहुँचते हैं – व्याकरण के सूर्य प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी के चरणों में बैठकर विद्या–प्राप्ति करने के लिए।

क्या उपर्युक्त तथ्यों पर विचार करने से कुछ महानुभावों द्वारा की गई स्वामी दयानन्द जैसे एकनिष्ठ संन्यासी की 'अज्ञात–जीवनी' विषयक प्रकल्पना पूर्णतः विसंगत एवं अनौचित्यपूर्ण प्रतीत नहीं होती है?

8–17 टाउनशिप, पो. नर्मदानगर,
जि. भरूच, गुजरात – 392015,
मो. 9879528247

☞ पृष्ठ 05 का शेष

सब दुःखों का मूलकारण ...

में ही रास्ते से वापिस लौट आये। सीधे चक्कियों पर जाकर आपने खराब कनक पकड़ ली। आज के बाद आपके शासन के समय जैसी रोटी कैदियों को मिलती रही, मुझे याद नहीं कि पाँच साल के अरसे में, आई.जी. के दौरे के दिनों को छोड़ कर, कभी ऐसी मिली हो।

परन्तु यह काम एक सुपरिंटेंडेंट ही कर सकता है। मैडिकल ऑफिसर चाहे कैसा ही दयानतदार और साहसी क्यों न हो, उसके सब प्रयत्न निष्फल जाते हैं, कारण उसके हाथ में वह डंडा नहीं होता, जो बिगड़े हुओं को सुधारता है, बल्कि *दरअसल इसके उलट डण्डे को चलाने* वाला उसके विरुद्ध होता है। एक डॉक्टर साहिब ने मेरे सामने रोटी ठीक करने का बड़ा ही प्रयत्न किया। परन्तु आपके साहस और उद्योग का फल आपको बहुत ही तुच्छ मिला। रोटी आपके समय में आगे से बेहतर तो हो गई, परन्तु आपको बड़े कष्ट उठाने पड़े। रोटी के सवाल को समझने के लिए दारोगा के कुछ ढंगों को समझना जरूरी है। सबसे पहले जो भाव किताबों में दरज किया जाता है, उससे बहुत कम भाव का, अर्थात् बहुत नीचे दर्जे का अनाज खरीदा जाता हैं जितने मन खरीद पुस्तकों में दर्ज की जाती है, उससे खरीद काफी कम होती है। दस–बीस मन साफ अनाज और कुछ सेर साफ दाल, घी हर वक्त गोदाम के अन्दर साहिब लोगों के मुलाहिजे के लिए रखा जाता है। इस गोदाम से ही साहिब, दारोगा और बाबुओं के घोड़ों और गौओं को दाना मिलता है। जब यह अनाज पिसता है, तो भूखे कैदी इसे कच्चा ही खा जाते हैं और जो कमी इस तरह होती है, वह यही (दाना) मिलाकर पूरी कर दी जाती है। जो अनाज बाहर से आता है, उसके अंदर यह दाना तो नहीं, किन्तु और सस्ते मेल के दूसरे अनाज आगे ही काफ़ी मिकदार में मिले रहते हैं। पिसकर आटा गोदाम पर जाता है और वहाँ से दारोगा और उसके परबरदाओं (आश्रितों) के यहाँ भेजा जाता है। इसी आटे में से जो गोदाम पर जाता है, साफ़ किया हुआ और छाना हुआ आटा उन कैदियों के काम आता है, जो अफसरों की मेहरबानी से अपने खाने का जुदा इंतजाम करते है। रंगरूटों को सुबह और शाम रसद छोटे डॉक्टर साहिब के सामने तुल कर मिलती है। तोलने वाला अक्सर कोई चालाक बनिया या कहार होता है। कंडा गलत और बट्टे कम वजन के होते हैं। इस कंडे और बट्टों से तुला हुआ माल लंगर जाता है। वहाँ से एक या दो राटियाँ कनक के आटे की गोदाम में वापिस आ जाती हैं। बाकी आटे की रसद कैदियों की गिनती से ज्यादा बनती है, क्योंकि लंगर से दारोगा, बाबू और जमादारों के परबरदा फ़ालतू रोटी लेते हैं। पकाने वालों ने तो भला पेटभर खानी ही हुई, पर वे दिनभर बेचते भी हैं। लंगर के मेट को तारीख देनी पड़ती है, इसलिए वह अपना घर यहीं से पूरा कर लेता है। सब जेलर इन सब तरीकों को इस्तेमाल नहीं करते। देश और काल के अनुसार कई बातें इनमें से छोड़ दी जाती है। एक मिरचों अथवा अमचूर की बोरी बरसों चल जाती है। एक घी का कनस्तर अस्पताल के कई बीमारों को इस संसार–सागर से पार कर देता है। डॉक्टर को इन सारी हालतों का ज्ञान, जो हर एक जेल में इन से थोड़ी–थोड़ी भिन्न होती हैं, कई महीनों में होता है। जब वह अपने ज्ञान को इस्तेमाल करने लगता है, तो उसे बदल कर किसी और स्थान पर भेज दिया जाता है। अक्सर डॉक्टर लोग दो में से एक प्रयत्न करते हैं। कोई तो यह समझते हुए कि इसमें कैदियों का कोई कसूर नहीं, अपना ध्यान इस बात पर देते हैं कि पूरी–पूरी रसद लंगर में पहुँच जाय और वहाँ से लौटने न पावे। ये साहिब तो इसलिए सफल नहीं होते कि हिसाब रखने वाले आखिर दारोगा के ही आदमी होते हैं। एक बार मैडिकल साहिब ने अपने हाथ से तोल कर कुल आटा अपने सामने लंगर में पहुँचा दिया। अपने सामने उसमें पानी उलटवा कर आप लंगर को ताला लगा कर चाबी अपने साथ ले गये। अब आटा बाहिर तो नहीं जा सकता था। परन्तु दारोगा खूब समझता था, अगर आज रोटियाँ अच्छी पक गयीं, तो कल फिर अच्छी पकानी पड़ेगी। इसलिए उसने दो–तीन रोज़ लगातार रात के वक्त तीन–तीन मन आटा आग में फैंक कर जलवा दिया। डॉक्टर साहिब सुबह आये, देखा, रोटी भी फ़ालतू नहीं पकी हुई, आटा भी नहीं बचा पड़ा और तैयार रोटी भी आगे की माफ़िक कच्ची है। दारोगा ने झट कहा 'डॉक्टर साहब, आपको गलती लगती है, जेल–मैनुअल में तो कई फजूल बाते भरी पड़ी है। अब तो आपने खुद देख लिया। पाँच छटांक आटे में साढ़े सात छटांक रोटी पक ही नहीं सकती और दिल ही दिल में हँस कर कहा 'तुम क्या हो? मैंने तुम से भी सयानों को उल्लू बनाया है।' डॉक्टर साहब भी शर्मिन्दे होकर चुप हो रहे। दूसरे विचार के डॉक्टर मूल को त्याग अंत को पकड़ना चाहते हैं। वे कहते हैं 'जेलर से क्या काम? हम तो लांगरियों से रोटी पूरी लेंगे। वे चाहे, जो करें।' लांगरी भी नित्य ढंग से अपने आपको बचा लेते हैं। जो थब्बे रोटियों के डॉक्टर साहिब के मुलाहिजे के लिए लगाये जाते हैं, उनके ऊपर और नीचे और बीच की तीन चपातियें बज़नदार होती हैं। बाकी सब वही छः छटांक की और कच्ची। इस पर भी जिस तकड़ी से ये रोटियें तोल कर दिखायी जाती है, उसमें भी आधा छटांक का फरक होता है। अगर कोई रोटी एक–आध पकड़ी ही गयी, तो भी क्या? आखिर चार हजार रोटियाँ यकसां भी तो नहीं पक सकती। आखिर इनको भी चुप ही रहना पड़ता है।

क्रमशः

देहली बम रहस्योद्घाटन से साभार

पत्र/कविता

डायरेक्टर की शर्त

सिफारिशी पत्र के साथ, गीतकार महोदय अपनी कुछ कविताएँ एवं नज्म आदि लेकर फिल्म निर्माता के पास पहुँचे और अपनी किसी फिल्म में उनके काव्य का उपयोग करने का निवेदन किया। गीतकार ने यह भी कहा कि फिल्म की कहानी और डायलॉग लिखने में उन्हें महारथ हासिल है।

निर्माता ने फोन करके अपने पी.ए. कम डायरेक्टर को वहीं बुला लिया और गीतकार से परिचय करवाया। डायरेक्टर ने सरसरी तौर पर उनके गीतों को देखा। कुछ समय पश्चात् उन्होंने गीतकार को सम्बोधित करते हुए कहा कि आपके गीत विशुद्ध काव्यमय और साहित्य के निकट हैं। फिल्मों में काव्य और साहित्य तो कभी का गायब हो चुका है। यही स्थिति कहानी की है। बिछुड़ना–मिलना, रोना–रूलाना या अन्य सामाजिक सरोकर कभी के हाशिए पर आ गए हैं। आजकल एकदम खुलापन, बिंदास, आइटम सीन और बोल्ड सब्जेक्ट ही फिल्मों को गति दिला सकते हैं।

गीतकार निराश हुए और जाने का संकेत दिया था कि डायरेक्टर ने कहा, *'क्या आपको होली त्यौहार पसंद है तथा इसे मनाते भी है?'* गीतकार ने कहा, "होली में सुधार होने के बावजूद भी हुल्लड़ता, अभ्रदता, गाली–गलोज और बदतमीजी बरकरार है। इसी वजह से मैंने होली खेलना बंद कर रखा है। उस दिन मैं घर से बाहर ही नहीं निकलता।"

डायरेक्टर ने कहा – 'आप फिर से होली मनाना शुरू करें और होली में सुधार के पहले वाले दौर में चले जाइये या फिर सुधार होने के बावजूद वाले दौर को आत्मसात कीजिए। उसके पश्चात् गीत रचना और फिल्म कथा लिखकर लाइये। आपको निश्चित तौर पर हम हमारी फिल्म में स्थान देंगे।'

दिलचस्प
चुरू, राजस्थान– 331001

वेदों की शुभकामना यही है

घोंसला बन रहा है,
घर आबाद हो रहा है।
यह नीड़ का बन जाना,
मुबारक हो, मुबारक हो।।

प्यारे विहग, भूखे न रह जाना,
है लगा अमरूद पास में,
खाकर भूख मिटाना।
पानी भी है वहीं पर,
प्यासे न रह जाना।
यह नीड़ का बन जाना।
मुबारक हो, मुबारक हो।।

भगवन्! हम करते विनय यही हैं
नित बना रहे यह, पक्षियों का चहचहाना।
'वेद' की शुभकामना यही है,
सारे घर की भी चाह यही है
सुनाते रहें ये खग, अपना मधुर गुनगुनाना।।
यह नीड़ का बन जाना
मुबारक हो, मुबारक हो।।

मुबारक हो इनका कलरव,
मुबारक हो इनका गाना,
मुबारक हो 'वेद' का सुनते जाना।
खुशखबरी बस यही है, सबको गाकर सुनाना।।
यह नीड़ का बन जाना
मुबारक हो, मुबारक हो।।

वेद प्रकाश शास्त्री
4–ई, कैलाश नगर,
फाजिलका पंजाब – 152123

मानव की उत्पत्ति कब और कैसे हुई?

ईश्वर नें, पूरी सृष्टि रचने के बाद अर्थात् पशु–पक्षी, कीट, पतंग, पहाड़, समुद्र, नदियाँ, नाले, झील, तालाब, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, आकाश, आदि सब रचने के पश्चात्, मानव की उत्पत्ति तिब्बत के पठार पर, पृथ्वी के अन्दर, कृत्रिम गर्भाश्य बनाकर, अनेक युवा स्त्री, पुरुषों की उत्पत्ति की।

साथ ही चार ऋषि, जिनकी आत्मा अति श्रेष्ठ व पवित्र थी, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा थे, उनके हृदय में, चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद हैं उनका प्रकाश करके, उनके मुख से उच्चारित करवाए जिनको उपस्थित सभी युवा स्त्री–पुरुषों ने, उस वेद ज्ञान को सुना। उन पुरुषों में, ऋषि ब्रह्मा भी थे जिनकी बुद्धि अति तीव्र थी, उन्होंने उन चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और उपस्थित लोगों को सुनाया। इसके बाद यह वेद–ज्ञान, पिता अपने पुत्रों को, गुरु अपने शिष्यों को सुनाते रहे और इस प्रकार यह वेद ज्ञान लाखों–करोड़ो वर्षों तक चलता रहा इसलिए इस वेद–ज्ञान को श्रुति भी कहते हैं यानि सुनकर दूसरों को सुनाना।

लाखों–करोड़ों वर्षों के बाद जब कागज, स्याही, कलम, आदि का आविष्कार हो गया तब इनकों चार पुस्तकों में लिपिबद्ध कर दिया जिनको वेद कहते हैं।

इन्द्रदेव गुलाटी (म्यांमार वाले)
18/186, टीचर्स कॉलोनी
बुलन्दशहर (उ.प्र.) 203001
मो. 8958778443

****

अंगदान-सिंगापुर में

सिंगापुर विश्व के प्रमुख आर्थिक क्षेत्रों में गिना जाता है। परन्तु अंगदान में भी वह सर्वोच्च स्थान रखता है। सिंगापुर के समस्त चिकित्सालयों में यह परम्परा है कि मृत शरीर से चिकित्सक स्वतः ही महत्त्वपूर्ण अंग निकाल कर बाकी शरीर उस मृत के परिवार वालों को सौंप देते हैं। यह सरकारी नियम है। इस कारण सिंगापुर जरूरतमंद मरीज प्रत्यारोपण के लिए निराश नहीं होते?

सिंगापुर की भांति यूरोप के समस्त देशो में भी यह कानून होता है? काशः ऐसा कानून हमारे भारत में भी सम्भव होता? यह उल्लेखनीय है कि सीमा पर आयोजित लड़ाई होती है जिसमें सैनिकों के अनेक अंग खराब हो जाते हैं। अंग दान के माध्यम से उसे बहादुर सैनिकों को नया जीवन जीवन मिल सकता है?

कृष्ण मोहन गोयल
113–बाजार कोट
अमरोहा, उ.प्र.

****

'आर्य जगत्' को इतने अधिक लोग पढ़ते हैं?

सदा सत्य–पथ पर चलने और चलाते रहने वाले अपने आर्यसमाजी बंधुओं के बीच में ही आर्य–विचारों के प्रचार करने को मैं दिन में टार्च जलाने जैसा अनावश्यक मानता हूँ।

देश की आजादी हेतु जिस तरह आजाद, भगत, बिस्मिल्लादि वीरगण तो स्वदेश के अंदर से लगे हुए ही थे, इसी स्वातंत्र्य–समर–यज्ञ को वीर उधम सिंह, मदन लाल, रासबिहारी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस आदि वीर गण देश के बाहर से कर रहे थे। उसी तरह वेद–प्रचार सिर्फ आर्यसमाज के अंदर से ही नहीं, बल्कि बाहर से भी हो, इसीलिए मैं भी आर्येतर पत्र–पत्रिकाओं में ही ज्यादा लिखना पसंद करता हूँ। किंतु जब अपने आर्य बंधुओं से ही कोई निवेदन या शिकायत करना हो, तो आर्य–पत्रों का ही सहारा लेना पड़ता है। इसी क्रम में मैं 'आर्यजगत्' में भी अपना कुछ–कुछ विचार रखने लगा। किंतु इसमें छपे हमारे हर लेख पर देश के कई भागों से हर वर्ग के प्रबुद्ध जनों के समर्थन व विरोध की इतनी प्रतिक्रियायें मिलने लगी, तो मुझे ताज्जुब होने लगा कि 'आर्य जगत्' को इतने अधिक लोग पढ़ते हैं? मैं नहीं जानता था कि पौराणिक– नेता भी आर्य जगत् को ही प्रमुखता देते होंगे और मुझसे पूछने भी लगेंगे कि मंदिर का पुजारी होकर भी आप आर्य समाजियों–स्व स्वधर्म (पाखंड) विरोधी लेख क्यों नहीं देते? (ताकि कोई दूसरा पुस्तैनी पाखंडी वहाँ विराजित हो और हमारे 'धार्मिक ठग–कंपनी' के नेटवर्क से जुड़ कर यजमानों की बुद्धि पर ताला लगाते रहे!?) यानि यजमानों–सीधे–सच्चे हिंदुओं को मूर्ख बना कर उसकी पाकेटमारी करता रहे?

मुझे भी लगता है कि संयोग या दुर्योग से सचमुंच ही मैं पंडितों–पुरोहितों के हिरण्यकश्यपी समाज में प्रहलाद बनकर बेमेल–सा ही टपक पड़ा हूँ। जो इन लोगों को न मुझे उगलते बन रहा है, न निगलते ही। मैं भी आत्माहुति की बलिवेदी पर पाखंडों से खेलने और लड़ने का खूब आनंद ले रहा हूँ। क्योंकि मेरे विरोधियों के पास सिर्फ स्वार्थ भरा पाखंड है, जबकि मेरे पास वेद का सत्यार्थ है, इसीलिए विजयप्रद–सत्य हमारे साथ है!

ऐसे में आर्यजगत् से हमें मिल रहे अभूतपूर्व–आत्मीय उत्साहवर्द्धन हेतु सभी पाठकों को कृतज्ञता पूर्वक शत्–शत् साधुवाद!

आर्य प्रहलाद गिरि
आसनसोल
9735132360

आर्य समाज कोटा ने महिला श्रमिकों को साड़ियां बांटीं

आर्य समाज कोटा द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दिहाड़ी श्रमिक महिलाओं को केशवपुरा स्थित दिहाड़ी श्रमिक स्थल पर साड़ीयां बांटी गईं तथा महिला सशक्तिकरण एवं महिला अधिकारों की जानकारी दी गई।

इस अवसर पर पूर्व उप प्रधान अर्जुन देव चढ्ड़ा ने कहा कि वैदिक संस्कृति में महिलाओं को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। महिलाएं स्वावलंबी एवं सशक्त बनें जिससे समाज का समग्र विकास हो सके।

डी.ए.वी. स्कूल कोटा की प्राचार्य श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि वे जीवन

में शिक्षा के महत्व को समझें और अपने परिवार को शिक्षित बनाने के लिए कार्य करें।

पुत्र डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता ने महिलाओं को गुटका तंबाकू आदि का नशा से बचने की नसीयत दी तथा नशे से होने वाली कैंसर जैसी घातक बीमारी के बारे में उन्हें जानकारी प्रदान की। आर्य समाज गायत्री बिहार के प्रधान अरलवद पांडे ने श्रमिक महिलाओं को बिना औषधि स्वस्थ रहने के लिए योग एवं प्राणायाम के बारे में बतलाया।

डी.ए.वी. के धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य ने वैदिक संस्कृति में महिलाओं के स्थान की चर्चा करते हुए कहा कि प्राचीन काल में महिलाओं को पुरुषों के समान ही समानता के अवसर थे इतिहास में गार्गी मैत्री जैसी विदुषी महिलाओं का नाम मिलता है।

आर्य समाज वसंत कुंज में स्वामी दयानंद सरस्वती जन्मोत्सव

आर्य समाज वसंत कुंज, आर्य समाज मार्ग, सेक्टर बी 2, वसंत कुंज, नई दिल्ली की ओर से आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म व बोध उत्सव बड़ी धूम–धाम के साथ मनाया गया। इस महत्त्वपूर्ण दिवस के विशेष सत्संग में बड़ी संख्या में क्षेत्र के स्त्री–पुरुष, युवा व बच्चों ने भाग लिया। हवन व भजन के बाद समारोह का मुख्य आकर्षण था वैदिक विद्वान् श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी का प्रवचन। अपने प्रवचन में विद्वान् वक्ता ने स्वामी दयानन्द के जीवन व शिक्षाओं को स्मरण

करते हुए कहा कि स्वामी जी ने सदैव पाखंड व अंधविश्वासों का खंडन किया था। आज के समय में हमारा शुद्ध आचरण व व्यवहार ही स्वामी जी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्री यजुर्वेदी ने आगे कहा कि हम अपने बोध व ज्ञान से अपने जीवन को सुन्दर व प्रेरक बनायें। आपने उपस्थिति को बच्चों के चारित्रिक विकास पर अधिक ध्यान देने पर बल दिया।

समारोह का समापन ऋषि लंगर से हुआ।

डी.ए.वी. स्कूल नादौन (हिमाचल) में विज्ञान दिवस

डी.ए.वी. स्कूल नादौन (हि.प्र.) में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस प्रधानाचार्य आर.एस. राणा के नेतृत्व में हर्षोल्लास और श्रद्धाभाव से मनाया गया। जिसमें विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम प्रधानाचार्य आर.एस. राणा द्वारा दीप ज्योति प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम को शुरू किया गया। इस अवसर पर उन्होंने बच्चों को बताया कि महान् वैज्ञानिक सी वी रमन ने 28 फरवरी को किया था 'रमन प्रभाव' का आविष्कार। विज्ञान से होने वाले लाभों के प्रति समाज में जागरुकता लाने

और वैज्ञानिक सोच पैदा करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय विज्ञान दिवस हर साल भारत में मनाया जाता है।

कार्यक्रम में कक्षा पाँचवीं से दसवीं तक के छात्र–छात्राओं द्वारा स्वागत गीत, समूह गान, भाषण, एक लघुनाटिका प्रस्तुत की गई जिसमें महान् वैज्ञानिक थामस अल्वा एडीसन के बाल्यकाल जीवन को दर्शाया गया।

इस अवसर पर प्रधानाचार्य महोदय ने छात्रों द्वारा लगाई गई मॉडल प्रदर्शनी का निरीक्षण अपने साइंस अध्यापकों सहित किया और उन्होंने बच्चों से सवाल जवाब भी किए। साथ ही साइंस जगत में वर्तमान समय में ही रही नई–नई वैज्ञानिक खोजों के विषय में अवगत करवाया गया। अंत में प्रधानाचार्य ने अध्यापकों व बच्चों को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव ...

स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को बताया, उनके किए गए कार्यो की प्रशंसा की तथा शेष कार्यो को आगे बढ़ाने के लिए मिल जुल कर काम करने पर बल दिया।

आचार्य धर्म बन्धु जी ने महर्षि दयानन्द के समाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय कार्यों का वर्णन बड़े ही आकर्षक अंदाज में किया जिसे सुनकर श्रोता गण मंत्रमुग्ध हो गए।

उसके पश्चात कार्यक्रम के सम्मानित अतिथि श्री दयाशंकर कुमार, उपायुक्त, जवाहर नवोदय विद्यालय समिति (बिहार, झारखण्ड, पं. बंगाल) भी उद्बोधन दिया।

ततपश्चात् भजन संध्या का सुमधुर दौर प्रारंभ हुआ। धर्माचार्य, भजनोपदेशक श्री मनोज शास्त्री, श्री त्रिपुरारी मिश्रा, डी.ए.वी., श्री संजय कुमार ठाकुर, श्री पी. के. साहा, श्री रनवीर सिंह एवं श्रीमती अनु कुमारी, श्री दीपक मिश्रा, सुश्री वंदना, श्री राम कृष्ण आदि संगीत शिक्षकों ने मनमोहक भजन प्रस्तुत किए।

राष्ट्रीय भजन प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार विजेता सुश्री वन्दना को शॉल देकर विशेष सम्मानित किया गया।

श्री आर. राय., डी.ए.वी. खगौल के प्राचार्य, ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए महर्षि दयानन्द के प्रति आभार व्यक्त किया।

शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ तथा आगत सभी लोगों ने ऋषि लंगर के प्रसाद का आनन्द लिया।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 20/21-03-2019

आर्य समाज पटियाला में ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज मंदिर पटियाला में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पटियाला के सयुंक्त तत्वाधान में ऋषि जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव बड़ी ही श्रद्धा एवं धूम–धाम से मनाया गया जिसका शुभारम्भ वैदिक यज्ञ के साथ हुआ जिसमें आर्यजनो ने आहुतियाँ प्रदान कर परम पिता परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त किया।

मुख्या प्रवक्ता के रूप में पधारे प्रिंसिपल विवेक तिवारी ने अपने सम्बोधन कहा कि महर्षि दयानन्द जी को शिवरात्रि के दिन बोध हुआ और उन्होंने अपना सारा जीवन समाज, कल्याण में दिया। उन्होंने समाज में व्यापत बुराईयों – छुआ–छुत, धर्म के नाम पर पाखंड एवं आडम्बर का विरोध किया। वेद मार्ग अनुसार केवल एक ही निराकार ईश्वर को मानने को कहा। उन्होंने विशेष रूप से नारी शिक्षा तथा समानता का उपदेश किया। आगे उन्होंने बताया कि डी.ए.वी. संस्थओं में पढ़ाई के साथ साथ बच्चों का चरित्र निर्माण भी किया जाता है।

डॉ. ओम देव आर्य ने भारत के स्वर्णिम इतिहास के बारे में बताते हुए कहा कि हम राम–ईषण की संताने है जिन्होंने हमें सत्य कर्म और वीरता का सन्देश दिया जिससे हम पुनः अपना विश्व गुरु होने का गौरव प्रपात कर सकते है।

बिजेन्दर शास्त्री ने मंच संचालन किया।

प्रिंसिपल पंकज कौशिक तथा सागर सूद ने भारतीय सेना की वीरता तथा तथा सम्मान में गाई कविताओं से सारा पंडाल तालियों की गडगडाहट से गूंज उठा।

सहारनपुर से पधारे भजनोपदेशक आज़ाद लहरी तथा संगीत अध्यापिका रजनीत कौर ने अपने मधुर भक्तिमय भजनो से सबका मन मोह लिया।

प्रधान राज कुमार सिंगला ने सबका धन्यवाद करते हुए कहा कि वेद अनुसार ईश्वर को केवल वैज्ञानिक तरीके से ही पाया जा सकता है किसी पाखंड आडम्बर से नहीं।

इस महायज्ञ का समापन प्रसाद स्वरूप ऋषि लंगर और शांति पाठ के साथ हुआ।

बी.बी.के. डी.ए.वी. अमृतसर में सात दिवसीय समाज सेवा शिविर

बी.बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर के एन.एस.एस. विभाग द्वारा आयोजित सात दिवसीय कैंप के समापन अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कैनेडा के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री गगन चोपड़ा तथा श्रीमती आशुला चोपडा द्वारा मुख्य यजमान की भूमिका निभाई गई और एन.एस.एस. छात्राओं की प्रशंसा की तथा उन्हें निरन्तर ऐसे कामों को करने के लिए प्रेरित किया गया।

इस अवसर पर मल्टीमीडिया विभाग द्वारा कैंप के भिन्न–भिन्न कार्यो पर तैयार की गई डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। कु. समीक्षा, सोनलप्रीत को बैस्ट कैम्पर के सम्मान से सम्मानित किया तथा शेष छात्राओं को सर्टीफिकेट दिए गए।

कॉलेज प्राचार्या डॉ. पुष्पिन्द्र वालिया ने एन.एस.एस. विभाग की सभी छात्राओं को उनके इस प्रशंसनीय प्रयास की प्रशंसा करते हुए समाज सेवी कार्यो के लिए प्रेरित किया। आपने कहा कि मनुष्य की सच्ची खुशी दूसरो की सेवा करने में है।

डॉ. वी.पी. लखनपाल सदस्य, (स्थानीय प्रबन्धकर्त्री समिति) ने छात्राओं को बधाई दी तथा ऐसे समाज सेवी कार्यो को करने के लिए प्रेरित किया। श्री सुदर्शन कपूर (अध्यक्ष, स्थानीय प्रबन्धर्त्री समिति) ने आए हुए अतिथियों का धन्यवाद किया तथा एन एस एस छात्राओं को बधाई दी।

दरबारी लाल डी.ए.वी. पीतमपुरा में हुए विविध कार्यक्रम

आर्य समाज दरबारी लाल डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, पीतमपुरा में जनवरी–फरवरी के महीने में आर्यसमाज से संबद्ध कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। प्रत्येक दिवस प्रार्थना सभा का शुभारंभ गायत्री मंत्रों की अनुगूंज से हुआ व गुरुजी द्वारा वैदिक मंत्रों का सस्वर गायन हुआ। मंत्रों के अर्थ भी स्पष्ट किए गए। डी.ए.वी. गान भी प्रतिदिन प्रार्थना सभा में सामूहिक रुप से विद्यार्थियों द्वारा गाया गया।

साप्ताहिक यज्ञ के अतिरिक्त बोर्ड परीक्षाओं के लिए तैयार विद्यार्थियों के लिए विशेष रुप से 'आशीर्वाद समारोह' का आयोजन हुआ। इस आयोजन में यज्ञ हुआ व विद्यार्थियों को आगत परीक्षाओं हेतु नैतिक रुप से प्रेरक वचन कहे गए व आशीर्वाद दिया गया।

इस समयावधि में 'विद्यार्थियों' को स्वास्थय संबंधी मूल्यों से अवगत कराया गया।' 'यौगिक आहार' के अन्तर्गत विद्यार्थियों को स्वास्थ्यवर्धक आहार से परिचित कराया गया। विद्यालय में 'हैल्थ मेला' भी आयोजित हुआ जिसमें 'रक्त–दान' व 'फ्री हैल्थ चैकअप' का भी आयोजन किया गया। विद्यालय के शिक्षक, भूतपूर्व विद्यार्थी व अभिभावकों ने इस कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया। स्वास्थ्य संबंधी जानकारी भी इस कार्यक्रम में दी गई। शारीरिक कसरत व योगाभ्यास के लिए प्रेरित किया गया। रक्त–दान का महत्त्व विधार्थियों को समझाया गया।

सत्र के अंत में विद्यार्थियों को महापुरुषों व संतों के जीवन से संबंधित विशिष्ट मूल्यों से परिचित कराया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**